Regi. No.: MP HIN / 2006 / 16764 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल / 632 /2018 - 20

वीर निर्वाण संवत २५४५
माह- जुलाई २०१९
अङ्क -०४ (१९७)
वर्ष -१४ (१९)

विरागवाणी

मासिक

आशीर्वाद

संत शिरोमणि प.पू. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

प्रेरक : ब्र. श्री विशल्य भारती जी
निर्देशन : मुनि श्री विवर्धन सागर जी महाराज
सम्पादक : इंजी.आनन्दकुमार जैन, 9425620668
175, एम. गौतम नगर, भोपाल
सहसम्पादक : श्री देवकुमार जैन गुड़ा
४९/सी, कस्तूरबा नगर, भोपाल
मो. 09425608438
परामर्श मण्डल : डॉ. प्रो. सनत जैन, जयपुर
: श्री अनिल सेठिया महुआ (भीलवाड़ा)
: श्रीमति प्रमिला जैन 'पम्मी' कोटा
: प्रो.श्री मयंक जैन, टीकमगढ़
: श्री मुकेश जैन, पथरिया
: श्री कपूरचंद बंसल, जतारा
प्रकाशक एवं
प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन
कार्यालय : जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३
☎: 0755-2789703, मो.9425016879
Email-viragvani.jain@yahoo.com
(बैंक ड्राफ्ट 'विरागवाणी'के नाम से भेजें) पत्रिका के सम्बंध में पत्राचार एवं रचनाएँ कार्यालय के पते पर भेजें
कार्पोरेशन बैंक : A/c No. 065300201000101
IFSC CODE : CORP0000653
स्वामित्व : श्री सम्यग्ज्ञान दि. जैन विराग विद्यापीठ, भिण्ड (म.प्र.)

इस वेबसाइट से गणा. विरागसागर जी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें। www. ganacharyaviragsagar.com

विरागवाणी सदस्यता

परम शिरोमणी संरक्षक	-	५१०००/-
शिरोमणि संरक्षक	-	११०००/-
परम संरक्षक	-	५०००/-
संरक्षक	-	३१००/-
दस वर्ष	-	११००/-
मूल्य	-	१०/-

- **समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।**
- **प्रकाशित विचारों से संपादक की सहमति जरूरी नहीं हैं। वह लेखक के अपने विचार हैं।**

पल्लव दर्शिका

❖ **सम्पादकीय :** **पल्लव**
- जैसा बोओगे वैसा मिलेगा : इंजी.आनन्दकुमार ४
- आत्मचिन्तन ५
- जिनोपदेश : श्रमणमुनि विश्वस्तसागर जी ५

❖ **प्रवचन एवं लेख**
- श्रमण संस्कृति में चातुर्मास...: श्री विरागसागरजी ६
- आओ समझें गुरु कौन ? : श्री विरागसागर जी ८
- वीर देशना का उद्‌गम : श्री विरागसागर जी १३
- जिज्ञासाओं का समाधान : श्री विरागसागर जी १६
- अध्यात्म है हृदय को ...:आ.विनम्रसागरजी १७
- मन की तृष्णा ज्ञान... : विमर्शसागर जी महाराज १८
- कार्योत्सर्ग यानी उपाधि..: आ.श्री विशुद्धसागरजी १८
- श्री कुलभूषण देशभूषण: मुनिश्री विशेषसागर जी १९
- त्याग-तपस्या जानकर... आ.विशिष्टश्री माताजी २०
- बगुला भक्ति भी माचारी : आर्यि.विदूषीश्री माता २१
- छने जल का प्रयोग क्यों : संस्कार सुरभि से २१
- नींबू पानी पी लीजिये : आर्यि.विश्वासश्री माताजी २२
- पूज्य गुरुदेव की तप...:आर्यि.विजिज्ञासाश्री माता २२
- प्राणायाम में उपयोग... : आर्यि. पुनीतचैतन्यमति २३
- कहानी लगे सुहानी : क्षुल्लिका विज्ञप्तिश्री माताजी २४
- आध्यात्मिक शंका-समाधान :श्री विरागसागरजी २७
- ४० वाँ पावन वर्षायोग - २०१९ : ३४
- विराग सेतु ... : डॉ. उदयचन्द्र जैन ४४

❖ **स्वास्थ्य जगत-**
- नेत्र रोग से निजात... : आर्यि.विवक्षाश्रीमाता जी २९

❖ **कविताएँ**
- निर्वाणपद : आ. श्री विशुद्धसागर जी २६
- कितनी कविता लिखूँ... : : कांति कुमार जैन ३०
- विञ्यांलजलि : ३१
- दीक्षा दिवस पर... आर्यि. विसंयोजनाश्री माता ३२
- विरागसागर नाम हमें.... : पं. वीरेन्द्र जैन ३३

❖ **समाचार** ४७

❖ **विराग वर्ग पहेली** ५०

संपादकीय

जैसा बोओगे वैसा मिलेगा

इंजी. आनन्द कुमार जैन

धर्म की व्याख्या बहुत सीधी है, संक्षेप में ये मान के चलें जो दो हृदयों को जोड़ने में समर्थ है, वह धर्म है। जो तोड़ने का काम करता है वह अधर्म है। व्यवहार धर्म जोड़ने से चलता है निश्चय धर्म अपने अंतरंग में विद्यमान विकारों को, कर्मों को तोड़ने से चलता है।

व्यवहार धर्म के लिये एकता के सूत्र में बंधना बहुत जरूरी है, समाज में जब एकता होती है, प्रेम-वात्सल्य का व्यवहार होता है तब नि:संदेह उस समाज में धर्म की वृद्धि होती है प्रभावना होती है। आप सब जानते हैं जब दो ईंट या पत्थरों को जोड़ना हो तो उसमें सीमेन्ट लगाना जरूरी होता है, सीमेन्ट न हो तो भले ही कितनी सारी ईंटें हो कोई भी महल या भवन ठहर नहीं सकता। अहंकारी व्यक्ति को कितनी भी प्रेम की भाषा समझाओं, सुनाओं वह चिकने घड़े की तरह ज्यों का त्यों रहेगा, कितने ही अच्छे शब्दों से उपदेश दो किन्तु वह मान नहीं पायेगा। जब उसे अपने अहंकार का बोध हो जाये, अपनी करनी पर पश्चाताप होने लगे, जब उसे लगे कि हाँ में कहीं गलत हूँ। स्वयं के दोष दिखाई देने लगें, जब वह उन दोषों का परिहार करने को तैयार हो जायें फिर किसी साधु व संत द्वारा दिया गया स्नेह और वात्सल्य उसे नियम से धर्म से जोड़ने में सफल व सार्थक हो जायेगा। जब तक वह स्वयं के अहंकार को तोड़ने के लिये तैयार नहीं होता है, जब तक वह स्वयं अपनी आलोचना करने को तैयार नहीं होता, अपने दोषों को देखता नहीं है, अपनी चित्त की भूमि को स्वच्छ नहीं करता है तब तक धर्म से उसका जुड़ाव नहीं हो पाता। वात्सल्य आत्म का एक गुण है इसलिये वात्सल्य को सब जगह रखा। चाहे तीर्थंकर प्रकृति का बंध करने की कारणभूत १६ कारण भावनायें हों, चाहे सम्यक्त्व के ८ अंग हो सब जगह वात्सल्य को रखा है। वात्सल्य तो मानव का सबसे पहला गुण है। कोई धर्म को माने या न माने किन्तु उसके अन्दर सबसे पहिले प्रेम और वात्सल्य हो। वात्सल्य एक ऐसा गुण है जिसके कारण चेतना के समस्त गुणों के प्रकट होने की संभावना रहती है।

परम पूज्य १०८ गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने प्रवचन में बताया कि हम सभी लालटेन को देखते हैं उसमें चारों ओर से कांच रहता है लेकिन फिर भी ऊपर और नीचे के हिस्से में छोटे-छोटे छेद रहते हैं जिसमें से स्वच्छ वायु अन्दर जाती है और काला धुंआ बाहर निकलता है। अर्थात् दीपक की लौ जो अग्निकायिक जीव है वह आसानी से ऑक्सीजन लेता रहे और कार्बन आक्साइड बाहर करता रहे तभी उसकी स्थिति दीर्घ समय तक रह सकती है। आचार्य महाराज कुन्दकुन्द स्वामी इसी का उदाहरण देते हुये कह रहे हैं जहाँ मंद-मंद हवा चल रही हो क्योंकि जहाँ हवा नहीं होती वहाँ भी दीपक बुझ जाता है और जहाँ तेज हवा होती है वहाँ भी दीपक बुझ जायेगा। इसलिए मंद-मंद हवा के बीच जलता हुआ सग्बोध अर्थात् ज्ञानरूपी दीपक। बन्धुओ! ध्यान रखो बोध अलग है और बोधि अलग है। ज्ञान का दूसरा नाम बोध और रत्नत्रय का दूसरा नाम है बोधि, वह ज्ञान भी अपना ज्ञान है क्योंकि पराया ज्ञान कल्याण कारी नहीं होता है अपना ज्ञान ही कल्याण कारी होता है।

आत्मचिन्तन

(प.पू. आ. श्री १०८ विमलसागर जी महाराज की नित्य डायरी से साभार २८.१०.१९८२)

।। ऊँ ह्रीं णमो आइरियाणं।।

हे आत्मन्! संसारी भव्य प्राणी आत्मा शोधन करता हुआ। राग द्वेष की हानि करने के लिए जीवनमुक्त परमात्मा पूर्णज्ञानी आनंदघन, निजनंद, परमानंद, सहजानंद, जिनकेवली अरहंत परमात्मा की भक्ति करना तथा स्तुति वन्दना, ध्यान मनन चिन्तन करना और उनके गुणों का बार-बार चिन्तन करता हुआ द्वादशानुप्रेक्षाओं का बार-बार चिन्तन करना मनन करते हुए संसार शरीर भोगों से विरक्त होकर व्रत संयम धारणकर आत्मविकारों को निकालकर अतिचार अनाचार को छोड़ता हुआ ज्ञानी ध्यानी बनता हुआ सामायिक प्रतिक्रमण स्तुति वंदना करता हुआ चेतन्य स्वभाव में रमणकर विभा व परणति से अलिप्त होता हुआ स्वाभावी बनकर सहजानंदी बनने के लिए आत्मविचारों का परिशीलन करता हुआ। एक दिन अपनी आत्मा की वृद्धि करता हुआ पूर्ण ज्ञानी चारित्र को व्यक्त करता हुआ। जीवन्मुक्त परमात्मा अविनाशी, अविकार परमहंस स्वरूप वन जाओगे और अपनी सर्व गलतियाँ निकालकर परमात्मा वन जाओगे। अत: हे विमलात्मन् तुम भी उतनी शक्ति है उसका परिशीलन करते हुए व्यक्ति बनने का सदैव प्रयत्न करना श्रेओ मार्ग है जामन मरण का नाशकर अपनी द्युति को प्रकाश कर अपने में निमग्न हो जाना ही श्रेयो मार्ग है।

जिनोपदेश

संकलन- समाधिस्थ श्रमणमुनि विश्वस्त सागर जी महाराज की डायरी से संकलित

विषयासक्तचित्तानां गुण: को व न नश्यति।

न वैदुष्यं न मानुष्यं नाभिजात्यं न सत्यभाक्।। क्ष.चू.१/१०

अर्थ- जो मनुष्य विषयभोग में आसक्त हो जाता है, उसके प्राय: सभी गुणों की इति श्री हो जाती है। ऐसे मनुष्यों में विद्वता, मनुष्यता, कुलीनता और सत्यता आदि एक भी गुण नहीं रहता।

पराराधनजाद् दैन्यात्, पैशून्यात् परिवादत:।

पराभवात्किमन्येभ्यो, न विभेति हि कामुक:।। क्ष.चू.१/११

अर्थ- विषयासक्त मनुष्य दूसरे की खुशामद, दीनता, चुगली, बदनामी और अपमान आदि की परवाह नहीं करता।

पाकं त्यागं विवेकं च वैभवं मानितामपि।

कामार्ता: खलु मुञ्चन्ति, किमन्यै: स्वञ्च जीवितम्।। क्ष.चू.१/१२

अर्थ- कामासक्त प्राणी भोजन, दान, विवेक सम और पूज्यता आदि का जरा भी ख्याल नहीं करते और की बात क्या? भोग विलास के पीछे वे अपने जीवन को भी नष्ट कर देते हैं।

अविचरितरम्यं हि, रागान्धानां विचेष्टितम्।। क्ष.चू.१/१३

अर्थ- विषयों में मोहित जन कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का विचार किये बिना ही स्वीकृत कार्य को अच्छा मानते हैं।

अधिस्त्रि राग: क्रुरोऽयं राज्यं प्राज्यनसूनपि।

तद्वञ्चिन्ता हि मुञ्चन्ति, किन्न मुञ्चन्ति रागिण:।। क्ष.चू.१/७२

अर्थ- स्त्रियों में अधिक आसक्ति करना बहुत भयङ्कर है। स्त्री भोग में लम्पटी जन राज्यपाट, धनदौलत और प्राणों की भी आहूति दे बैठते हैं। ठीक ही कहा है कि विषयी जन सभी कार्यों से हाथ धो बैठते हैं।

श्रमण संस्कृति में चातुर्मास का महत्त्व

प्रवचनकार -परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज

वर्षायोग की यह बेला हर नगर ग्राम समाज, परिवार और घर के श्रावकों को आनंद विभोर करने वाली है। इस अवसर पर साधुओं का समागम प्राप्त करने वाले हर नगर आनंद खुशी से झूम रहे हैं। जिस-जिस जगह भी साधुसंत विराजमान है उन सभी स्थानों पर चातुर्मास स्थापना का कार्यक्रम होता है। आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी से श्रावण कृष्ण पंचमी तक हर जगह कलश स्थापना का यह कार्यक्रम बड़े ही उत्साह से किया जाता है।

संतों का चातुर्मास धरा-धरती के असीम पुण्य से होता है और उसमें वे ही व्यक्ति निमित्त बनते हैं जिनका अनेकों भवों का पुण्य सत्ता में रहता है। यूँ तो वर्षायोग की प्रार्थना चातुर्मास से ही प्रारंभ हो जाती है। जहाँ भी हमारे संघ का वर्षायोग होता है वहाँ की समिति चातुर्मास में ही अगले चातुर्मास ही प्रार्थना करने लगती है इसके बाद जिस-जिस नगर, शहरों से संघ का विहार होता है कोई कार्यक्रम होता है वहाँ की समाज भी चातुर्मास की प्रार्थना किये बिना नहीं रहती। हर नगर, ग्रामवासियों की हार्दिक भावना रहती है संतों का चातुर्मास हमारे नगर, हमारे शहर और हमारे गाँव, मोहल्ला में हो, लेकिन यह बात भी बिल्कुल सत्य है कि हर किसी को वर्षायोग का अवसर नहीं मिल पाता। जिस नगर, ग्राम के श्रावकों का पुराना पुण्य उदय में रहता है उन्हें ही यह अवसर प्राप्त हो पाता है।

प्राय: लोग पहले तो हमारे बड़े संघ को देखकर घबरा जाते हैं क्योंकि आमतौर पर दो, चार पिच्छियों का चातुर्मास कराना लोगों को कठिन हो जाता है लोग परेशान हो जाते हैं वहाँ हमारे संघ की ८०-८५ पिच्छि देखकर तो लोग सोच में पड़ जाते हैं इतने बड़े संघ का चातुर्मास कैसे होगा ? लेकिन बन्धुओ ! ध्यान रखे संतों की तपस्या में बड़ी शक्ति होती है संतों का बड़ा प्रबल पुण्य होता है। यद्यपि दिगम्बर जैन श्रमण साधनों के पीछे नहीं चलते फिर भी उनकी निर्दोष रत्नत्रय की साधना से स्वयं ही साधन उपलब्ध हो जाते हैं। उनके जाने से जंगल में भी मंगल हो जाता है। जब श्रेयांसगिरि में हमारे संघ का चातुर्मास होना निश्चित हुआ लोग घबरा गये महाराज जंगल में, जहाँ समाज का एक भी घर नहीं है वहाँ चातुर्मास कैसे होगा कौन चौका लगायेगा ? कौन कार्यक्रम में उपस्थित होगा ? बाहर से आने वाले यात्री भी वहाँ तक कैसे पहुंच पायेंगे ? मैंने कहा- साधुओं के पुण्य से सब होगा और बड़ी धूम-धाम से वहाँ का चातुर्मास सम्पन्न हुआ। पंचकल्याणक जैसा महामहोत्सव भी आयोजित हुआ। किसी बात की कोई कमी नहीं रही चौकों की तो ऐसी लाइन लगी थी कि समिति वालों के पास कमरे भी कम पड़ गये वेटिंग में नाम रखे गये।

२०१८ का सम्मेद शिखर जी जैसे स्थान पर ९० पिच्छियों का एक साथ चातुर्मास हुआ वहाँ की समिति (तेरह पंथी कोठी) पहले तो इस बात से चिंतित थी कि बांकी सब व्यवस्थाएँ तो हम लोग कर लेंगे लेकिन चौके की व्यवस्था कैसे होगी ? लेकिन जैसे ही वहाँ संघ पहुँचा तो चौकों की लाइन लग गई। २५-३० चौके स्थाई रूप में फिक्स हो गये, तेरह पंथी कोटी की एक धर्मशाला जिसमें लगभग ३५ कमरे थे चौकों से फुल हो गई। इसके बाद बीस पंथी कोटी में ८ से १० चौके मध्यलोक में, जिनकी जो संस्थायें थी उन संस्थाओं में अपने-अपने जगह के मंदिर धर्मशालाओं में चौके लगे परिणाम यह निकला ९०पिच्छिधारी साधु होने पर भी चौके खाली जाने लगे थे। कहने का तात्पर्य है संतों की साधना से व्यवस्थाएँ स्वयं उनके पास चलकर आती हैं।

दूसरी बात हमारे संघ के साधु भले कितने ही हो लेकिन वे अनुशासित रहते हैं कभी किसी से कोई वस्तु नहीं लेते, उन्हें पेन पुस्तक की जरूरत भी होती है तो वह भी गुरु के हाथ से लेते हैं इसलिए कभी किसी समिति वालों को बजनदारी मेहसूश नहीं होती अपितु संघ की त्याग, तपस्या और साधना को देख उनके अंदर अपार आनंद हर्ष और खुशी होती है।

बन्धुओ ! वर्षावास की यह पावन बेला आज सभी के मन को आल्हादित कर रही है।

चातुर्मास ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना का नाम है-

चातुर्मास स्व-पर कल्याण की प्रार्थना का नाम है।

चातुर्मास एक ही स्थान पर चार महीने स्थिर रहने का नाम है।

चातुर्मास प्राणी संयम और इंद्रिय संयम की पालना का नाम है।
चातुर्मास सद्गुरु से प्राप्त होने वाली शिक्षा का नाम है।
चातुर्मास स्वाध्याय और ज्ञान, ध्यान की त्रिवेणी का नाम है।
चातुर्मास जन-जन को धर्म और धर्मात्माओं से जोड़ने का नाम है।
चातुर्मास धर्मानुष्ठान और धर्म महोत्सव का नाम है।
चातुर्मास भावों को वैराग्यभय बनाने का नाम है।
चातुर्मास आत्मा से परमात्मा बनने का नाम है।
चातुर्मास श्रमण संस्कृति के प्रदीप का नाम है।
चातुर्मास भावी आशाओं के दीप का नाम है।

चातुर्मास धर्म कमाने का मौसम है- चातुर्मास संत समागम का अध्याय है, चातुर्मास सामाजिक एकता का सूत्र है, चातुर्मास वैराग्य जाग्रण का दूत है, चातुर्मास साधु और श्रावक का योग है, चातुर्मास धर्म प्रभावना का संप्रयोग है, चातुर्मास साधना शैली का मंत्र है, चातुर्मास प्रकृति की मधुर मुस्कान है, चातुर्मास खुशहाली की पहचान है, चातुर्मास अध्यात्म उन्नति का सौपान है, चातुर्मास ज्ञानवर्षा का अवसर है, चातुर्मास पूजा और भक्ति का त्यौहार है, चातुर्मास मंदिर चैत्यालयों की बहार है, चातुर्मास आत्म ज्ञान का श्रेय है, चातुर्मास धर्म जाग्रति की लहर है, चातुर्मास धर्म सुगंधि का झौंका है, चातुर्मास तप और त्याग का मौका है, चातुर्मास सदोपयोग की बेला है, चातुर्मास ज्ञानी जनों का मेला है, चातुर्मास अध्यात्म को निहारने का दर्पण हैं, चातुर्मास सद्गुण भरने का वर्तन है, चातुर्मास सिद्ध बनने का एक तरीका है, मुक्ति पाने का सच्चा मार्ग है।

बन्धुओ जब हम चातुर्मास शब्द को देखते हैं तो चार अक्षर से बना है इसलिए यह चार महीने का योग है। यूँ तो साधु-संत निरंतर पानी की तरह बहते रहते हैं उनके एक जगह स्थिर रूकने का समय केवल चातुर्मास है।

प्राचीन समय में वर्षायोग होता था। बड़े-बड़े त्यागी-तपस्वी जन चार माह तक एक स्थान पर योग धारण करते थे अर्थात् स्थिर एक आगमन में चार माह तक खड़े रहते थे फिर न गमना-गमन करते थे। आहार आदि के लिए उठते थे उसे कहते थे वर्षायोग। लेकिन आत्म के समय में इतनी शान्ति समर्थ्य नहीं है। एक आसन से नहीं बैठ सकते हैं आहार के बिना शरीर से साधना नहीं हो सकती है इसलिए आज के समय में वर्षायोग नहीं वर्षावास होता है अर्थात् जीव रक्षा के लिए साधुजन विहार नहीं करते एक निश्चित स्थान पर ही चार माह त्याग तपस्या और धर्ममय व्तीत करते हैं।

इस वर्षाकाल में संघ के साधुओं के अनेक नियम बढ़ जाते हैं अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार त्याग-तपस्या व्रत नियम, उपवास का प्रतिशत अधिक हो जाता है। कतिपय साधक संपूर्ण चातुर्मास में एक उपवास एक आहार करते हैं कतिपय २ उपवास एक आहार तो कोई तीन उपवास एक आहार करते हैं।

भाद्रमास की तो कहना ही क्या है उस समय हमारे संघ में आहार करने वालों का प्रतिशत चार में से एक गुना रह जाता है उसमें भी चतुर्दशी आदि पर्व पड़ जाये तो एक-दो आदि ही साधक आहार करते है। संघ का प्राय: उपवास रहता है।

साधुजन चातुर्मास काल में लम्बे लम्बे व्रत उपवासों की साधना करते हैं कोई १६ कारण में संपूर्ण भाद्रमाह के अर्थात् ३२ उपवास करते हैं तो कोई १६ कारण के १६ उपवास दसलक्षण के १० रत्नत्रय का तेला आदि उपवास करते हैं।

कभी-कभी तो मैं भी सोच में पड़ जाता हूँ कि इतने लम्बे उपवास इन्हें दूँ या नहीं लेकिन यह भी सोचता हूँ तपस्या में विघ्न बाधक न बन जाऊँ इसलिए मैं कहता हूँ अपनी शक्ति के अनुसार कीजिए शक्ति तस्तप की बात हमारे शास्त्रों में आई है। साधना में विघ्न बांधाएँ उपस्थित न हो इसको ध्यान में रखते हुए अपनी शक्ति को भी न छिपाते हुए जितनी भी साधना संभव है करो क्योंकि तप ही कर्मक्षय का प्रबल कारण होता है।

बन्धुओं इस चातुर्मास में साधुजन ज्ञान, ध्यान तप में लीन रहेंगे श्रावक जन भी यथा संभव उनके प्रवचन सुन क्लास पढ़कर अपने ज्ञान में वृद्धि करें इसी भावना के साथ सभी को मेरा मंगल आशीर्वाद।

जय बोलिए महावीर भगवान की- जय

आओ समझें गुरु कौन ? (गुरुपूर्णिमा)

प्रवचन- प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

गुण 36, 25 आठ बीस .....

आज गुरुपूर्णिमा का महोत्सव मनाया जा रहा है। जैनधर्म का यह एक बहुत बड़ा इतिहास है। हम प्राय: इसके इतिहास को भूल गुरु-शिष्य के संबंध को ही गुरु पूर्णिमा का प्रारंभ मानने लगते हैं लेकिन यह हमारा भ्रम है। यद्यपि गुरु-शिष्य के संबंध का भी महत्त्व है किन्तु गुरु पूर्णिमा के इतिहास को भी हमें जानना आवश्यक है।

हम अषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को ही गुरु पूर्णिमा क्यों मनाते हैं इसका कारण यह है कि आज के दिन गौतम गणधर को भगवान महावीर स्वामी जैसे एवं संसारी प्राणियों को गौतम गणधर जैसे गुरु मिले थे। आज के दिन इन्द्र अपनी युक्ति से इन्द्रभूति ब्राह्मण को भगवान महावीर स्वामी के चरणों में लाये थे।

भगवान महावीर स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हुए ६५ दिन को चुके थे किन्तु भगवान की दिव्य देशना नहीं खिरी। अपनी यहाँ यदि एक दिन प्रवचन न हो तो लोग कहने लगेगे महाराज तो आये नहीं, सभा क्यों रखी थी लेकिन बड़ा आश्चर्य है समवशरण में लाखों भक्त प्रतिदिन आते थे लेकिन किसी ने कुछ नहीं कहा, सभा में कोई अंतर नहीं आया।

बन्धुओ! जहाँ व्यक्ति श्रद्धा-भक्ति से बंधा होता है उसकी भावना ही अलग होती है लेकिन जो व्यक्ति टाईम, व्यक्ति, वस्तु से बंधा रहता है उसकी आस्था एक अलग तरह की होती है। वहाँ सभी लोग श्रद्धा से बंधे हुए थे वे प्रतिदिन आते और दिव्यध्वनि न खिरने पर दूसरे दिन की आश लगाकर लौट जाते, पुन: दूसरे दिन आते ऐसा करते-करते ६५ दिन बीत गये। बन्धुओ! अत्यंत निकट रहने वाले जो श्रद्धालु होते हैं उन्हें अपने आराध्य के विषय में बड़ी चिंता होती है सबसे अधिक व्याकुलता उन्हें ही होती है। समवशरण में असंख्यात देव-देवी एवं मनुष्य आते थे लेकिन किसी का सोच इस दिशा में नहीं गया अथवा गया भी हो तो कोई कुछ भी न कर सका लेकिन सौधर्म इन्द्र को इसकी सबसे बड़ी चिंता हुई। वह सोचता है यह अवसर्पिणी काल है लोगों की श्रद्धाएँ बड़ी कमजोर है कहीं किसी की श्रद्धा चलायमान न हो जाये, लेकिन यहाँ कोई ऐसा सुयोग्य पात्र नहीं है जो भगवान की दिव्यध्वनि को झेले अथवा उसके पुण्य से भगवान की दिव्य देशना खिरे। लौकिक बातों को तो दुनियाँ झेल लेती है लेकिन तत्व की बातों को झेलना इतना आसान नहीं है। चिंतन इंद्र अपने ज्ञान से जान लेता है कि विश्व में एक ही ऐसा व्यक्ति है वह है इन्द्रभूति ब्राह्मण, किन्तु उसे लाना आसान नहीं है। ध्यान रखिये किसी को बुलाना आसान नहीं होता और यदि वह अहंकारी हो तो उसे लाना और भी कठिन होता है। इन्द्र ने सोचा यदि मैं यूँ ही जाकर उनसे कहूँ हमारे तीर्थंकर भगवान के पास चलिए और कहीं उसने कह दिया कौन तीर्थंकर वे ही हमारे पास आ जायें तो इससे बड़ी भगवान की अविनय और क्या होगी ? उसने रास्ता निकाला।

विवेक, विद्या, बुद्धि में बहुत बड़ा अंतर होता है। विद्या शास्त्रीय होती है कष्ठगत होती है। बुद्धि कण्ठगत नहीं होती वह स्वयं के क्षयोपशम से उत्पन्न होती है। उसके लिए ज्ञान का मंथन करना पड़ता है। इन्द्रभूति ने अपना रूप बदला, ८० वर्ष के वृद्ध दादा जी से भी अधिक वृद्ध बन गया। जिसकी कमर झुकी हुई थी, हाथ में स्थित लाठी कांप रही थी, पैर कहीं के कही पड़ रहे थे, आँखों में कीचड़ छाया था, आँखे अंदर घुसी हुई थी। बालों में तो एक भी काला नहीं बचा था चांदी ही चांदी छाई थी ऐसा वह वृद्ध एक-एक डग चलता हुआ इंद्रभूति गौतम के आश्रम में प्रवेश करता हुआ आवाज लगा रहा था गौतम! गौतम! गौतम! गौतम का बहुत बड़ा आश्रम था ५०० उसके शिष्य थे। उन्होंने उस वृद्ध को देखकर बोला- ये बाबा! किसे पुकार रहे हो। सच्चा शिष्य अपने गुरु का बहुमान चाहता है, यही उसकी सच्ची श्रद्धा भक्ति का प्रतीक है। शिष्यों ने कहा- हमारे गुरु को आप गौतम कहते हो, आप श्री, श्रीमान, आदरणीय, पूज्यनीय शब्दों के साथ उन्हें पुकारों। वृद्ध दादा ने कहा- बेटा वृद्ध हो गया हूँ बुद्धि अब काम नहीं करती शेष अर्थ को तू ही लगा ले और मुझे उन तक

पहुँचा दे, बस यही चाहता हूँ। शिष्य ने उस वृद्ध की लाठी पकड़ी और उसे इन्द्रभूति गौतम तक पहुँचा दिया।

गौतम ने वृद्ध को देखकर कहा- कौन हो तुम ? कहाँ से आये हो ? तुम्हारा नाम क्या हैं ? मैं एक भक्त हूँ, अपने गुरु का छोटा सा शिष्य हूँ। मैं अपने गुरु के समवशरण रूप आश्रम से आया हूँ। मेरे गुरु ने एक सबक पढ़ाया था उसका अर्थ समझने आया हूँ। कल मैं अपने गुरु के पास जाऊँगा तो वे मुससे सुनेंगे। उन्होंने मुझे जो समझाया था उसे मैं भूल गया हूँ। अत: विद्वानों में आपका नाम सुनकर तथा आप निश्चित ही बतायेंगे ऐसी आशा लेकर मैं आपके पास आया हूँ, आप मुझे उस सबक के अर्थ को बतला दीजिए।

इन्द्रभूति गौतम को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बड़ी-बड़ी आँखें निकालकर उस वृद्ध को देखता है। अरे! इतना वृद्ध फिर भी आश्रम में पढ़ता है। ऐसे कौन गुरु हैं जो इतने वृद्धों को पढ़ाते हैं। यह वृद्ध भी बड़ा रूचिंवत है जो सबक को समझने की इच्छा से यहाँ तक आ गया।

बन्धुओ! कई शिष्य ऐसे होते हैं जो पाठ कण्ठस्थ नहीं करते और सोच लेते हैं कि हम गुरु से क्षमा मांग लेंगे। कह देंगे स्वाथ्य ठीक नहीं था किन्तु यह अच्छी बात नहीं सच्चे शिष्य के लिए सभी बात में गुरु की आत्मा प्रधान होती है गुरु द्वारा दिये गये होमर्वक को वह डर परिस्थिति में कम्पलीट करता है इन्द्रभूति ने कहा- वह कौन सा पाठ है वृद्ध ने इसे श्लोक सुनाया।

परिस्थिति में कम्पलीट करता है। इन्द्रभूति ने कहा-बतलाओं वह कौन सा पाठ है वृद्ध ने उसे श्लोक सुनाया-

त्रैकाल्यं द्रव्य षटकं नव पद सहितं जीव षट्काय लेश्याः।
पञ्चान्ये चास्तिकाया व्रत, समिति-गति ज्ञान चारित्र भेदाः।।
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवनं महितै प्राक्तमर्हद्भिरीशौः।
प्रत्येति श्रद्धाति स्पृशति च मतिमान यः सवै शुद्ध दृष्टिः।। १।।

इन्द्रभूति गौतम तो सुनकर ही अचम्बित हो गया, ऐसा श्लोक तो मैने कहीं नहीं सुना, इसका अर्थ क्या है त्रैकाल्यं तो ठीक है भूत, भावी और वर्तमान ऐसे तीन काल होते हैं लेकिन ६ द्रव्य तो कहीं पढ़ने में नहीं आये, १८ पुराण मुझे कण्ठस्थ है, सारे व्याकरण सूत्र मुझे कंठस्थ है ऐसा कोई ग्रंथ नहीं है जो मुझे कंठस्थ न हो, लेकिन ६ द्रव्य तो कहीं नहीं है। द्रव्य तो २५ होती है ये ६ द्रव्य, ये ९पदार्थ कहाँ हैं उसने सभी वेद पुराण उठाये सभी के पन्ने पलट लिए लेकिन श्लोक का अर्थ उसकी समझ में नहीं आ सका, वह घबरा गया अब मैं क्या करूँ, सारे संसार के लोग मुझे प्रकाण्ड विद्वान कहते हैं। संसार में मेरी तरह और कोई भी ज्ञानी नहीं है लेकिन आज मैं कैसे कहूँ कि मुझे इसका अर्थ नहीं आ रहा इसमें तो मेरी हँसी है। बन्धुओ! अहंकार अपनी कमी को सहसा स्वीकार नहीं करने देता है। वह तरीके निकालता है। इन्द्रभूति ने कहा- इसका अर्थ मैं तुझे क्या बतलाऊँ तुम तो वृद्धक हो, तुम्हें बतला भी दूँगा तो भी तुम वहाँ पहुंचते तक भूल जाओंगे। बताओं कहाँ है तुम्हारे गुरु मैं उन्हें ही उत्तर दूँगा। इन्द्र तो चाहता ही था। अत: प्रसन्न हो गया उसने कहा- हाँ, हाँ, चलिये मैं ले चलता हूँ। इन्द्रभूति गौतम जैसे ही चलने को तैयार हुआ तो उसके दोनों छोटे भाई एंव तीनों के ५००-५०० शिष्य उनके पीछे हो लिए १५०३ लोगों का विशाल जुलूस भगवान के समवशरण की ओर चला आगे-आगे वद्ध का रूप धारण किये हुए इन्द्र दौड़ता जा रहा था। सभी सोच रहे थे यह क्या चमत्कार है। यह वृद्ध जिस पर एक कदम चलना कठिन हो रहा था वह इतनी तेजी से चल रहा है। कि हमें दौड़ना पड़ रहा है। थोड़ी ही देर में समवशरण का दिव्य प्रकाश नजर आने लगा जिसे देखते ही इन्द्रभूति गौतम का मान भंग होने लगता है। वे सोचते है ओ हो! इस संसारक में मुझसे कभी बड़ा कोई ज्ञानी है। अभी तक तो मैं सोच रहा था मैं ही ज्ञानी हूँ। लेकिन जिन्होंने ऐसे कठिन पाठ अपने शिष्यों को पढ़ायें हैं वे गुरु कितने ज्ञानी होंगे। मैं उन्हें क्या समझाऊँगा अरे मैं समझाने नहीं, उनसे समझने जाऊँगा। ऐसा विचार करते-करते ही उसकी दृष्टि मानस्तंभ पर पड़ी और पूर्ण रुपेण मान गलित हो जाता है।

बन्धुओ! यह भी बड़े आश्चर्य की बात है मानस्तंभ ही नाम क्यों रखा, आज तक कहीं भी माया स्तंभ, लोभ स्तंभ, क्रोध स्तंभ नाम नहीं सुने मानस्तंभ ही होता है इसका कारण यह है कि जब भी अपने से श्रेष्ठ, पूज्यों के चरणों में जाओ तो अभिमान के साथ नहीं नम्रता के साथ जाना होता है। आज बड़ी दूर-दूर से भक्तगण बड़ी श्रद्धा से आये हैं अभिमानी व्यक्ति कभी नहीं आ सकता है मान गले बिना व्यक्ति मंदिर में भी प्रवेश नहीं कर सकता है। कितनी अच्छी बात है आप सभी जमीन पर नीचे बैठे हैं और साधुजन ऊपर (स्टेज पर) बैठे हैं। हो सकता है आप लोगों में कोई ऐसे भी व्यक्ति हो जो सोच रहे हो कि मैं भी तो ऊपर बैठ सकता हूँ। हाँ, बिल्कुल बैठ सकते हैं ये तखत हमारा नहीं आपका है, सिंहासन भी आपने रखा है आपका ही है। स्टेज भी आपकी है इतना सब कुछ करने पर भी आप बिना विकल्व के नीचे बैठ गये। ये बहुत बड़ी बात है। कई बार जब नये-नये व्यक्ति वैयावृत्ति करने के लिए आते हैं तो वे तखत पर ही बैठते का प्रयास करते हैं तो कोई न कोई व्यक्ति उन्हें इशारा करते हैं। भैया नीचे बैठो।

एक बार ऐसा ही हुआ पहली बार एक सज्जन वैयावृत्ति करने आये वे जैसे ही पाटे पर बैठने लगे तो लोगों ने मना किया। मैंने कहा अरे! उन्हें बैठने दीजिए उन्होंने भी कहा- महाराज तो मना नहीं कर रहे मैं तो बैठूगा, मैंने कहा- हाँ बैठो पर कपड़े उतार कर, वे तुरन्त दूर हो गये, मैंने कहा- अरे! बैठो न, वे बोले नहीं-नहीं, भूल से बैठ गया अब नहीं बैठूँगा, मुझे पता चल गया तखत पर कौन बैठ सकता है।

शास्त्रों में दो तरह के प्रमाण है एक तो यह कि इन्द्रभूति गौतम ने पहले भगवान से प्रश्न किये, एक दो नहीं ६० हजार प्रश्न किये। यदि लिखा जाये तो बहुत बड़ा शास्त्र बन जायेगा। दूसरा उल्लेख है दीक्षा लेने के बाद उन्होंने भगवान से प्रश्न किये तब भगवान की दिव्य देशना खिरी। कधं चरे, कधं चिट्ठे आदि मूलाचार में जो उल्लेख है वे सभी प्रश्न ही तो हैं तीर्थंकर भगवान ने उनका उत्तर जहाँ चरे जहाँ चिट्ठे आदि समाधान के रूप में दिया था।

बन्धुओ! इन्द्रभूति को वैराग्य हुआ उन्होंने निर्ग्रन्थ दीक्षा धारण की उनके साथ ही उनके दोनों भाई तथा सभी के ५००-५०० शिष्यों ने एक साथ दीक्षा ली। लाल किले पर जब २५ दीक्षाएँ एक साथ हुई तो लोग बोले- महाराज यह तो विश्व का बहुत बड़ा इतिहास बन गया। आ. शांतिसागर जी जब वहाँ गये तो उन्हें अंदर प्रवेश नहीं करने दिया। वे लाल किले के बाहर ही मैदान में बैठ गये दूसरे दिन शासन-प्रशासन के सभी व्यक्ति नत्मस्तक हो गये और धूम-धाम से महाराज को अंदर प्रवेश कराया। बन्धुओ! वहीं २५ दीक्षाओं ने जैनत्व की शान में चार चाँद लगायें। भगवान के समवशरण में एक साथ १५०३ दीक्षाएँ हुई। तीर्थंकर भगवान संस्कार नहीं करते उनकी साक्षी पूर्वक समवशरण में दीक्षाएँ होती है।

आज के दिन गौतम गणधर ने महावीर भगवान जैसे जगत पूज्य गुरु को प्राप्त किया उनकी साक्षी में दीक्षा ले मति, श्रुत, अवधि और मन:पर्याय ये चार ज्ञान एक साथ प्राप्त किये। ६३ ऋद्धियाँ उन्हें प्राप्त हो गई। ऐसी विशेष विशुद्धि उनकी जाग्रत हुई। जिस समय साधक की दीक्षा होती है उस समय की आत्म विशुद्धि इतनी अधिक होती है कि उस समय साधक सप्तम गुणस्थान में पहुँच जाते हैं। लेकिन यह भी सत्य है ऐसे विरले ही साधक होते हैं। आमतौर पर लोगों में राग, मोह के ऐसे परिणाम होते हैं जो विशुद्धि में अवरोधक बन जाते हैं इसलिए साधकों को चाहिए कि वे राग, मोह को छोड़ आत्म विशुद्धि की ओर कदम बढ़ायें।

दुनियाँ में गुरु सबसे बड़ी वस्तु होते हैं जिन्होंने दीक्षा देकर असीम उपकार किये हैं संसार के दलदल से ऊभारा है उन गुरु के उपकार को विश्व की कोई कीमत नहीं चुका सकती। गुरु शिष्य के प्राण होते हैं बिन गुरु के शिष्य का जीवन निष्प्राण होता है। गुरु शिष्य की आत्मा हैं। गुरु के बिना शिष्यत्व की कोई कीमत नहीं होती। भगवती आराधना ग्रंथ में आचार्य शिवकोटी महराज कहते हैं एक अक्षर प्रदान करने वाले गुरु को कभी नहीं भूलना चाहिए फिर जो दीक्षा शिक्षा दें उनके उपकार के विषय में क्या कहना। आचार्य वंदना में भी कहा है। **गुरु भत्ति संजमेण य तरन्ति संसार सायरं घोरं,** गुरु भक्ति से संसार रूपी असीम समुद्र भी पार हो जाता है। इसका मतलब है गुरु भक्ति के बिना कोई भी संसार से पार नहीं

हो सकता है। किसी का भी निर्वाण किसी का भी मोक्ष नहीं हो सकता हैं। मूलाचार में भी कहा है- **'आइरिय पसायेण विज्जा मंताग सिण्णन्ति** आचार्यों की प्रसन्नता से भक्त को बिना सिद्ध किये ही अनेकों विद्या और मंत्रों की सिद्धि हो जाती हैं। आज के समय में व्यक्ति सोचने लगता है अरे! अभी गलती कर लो बाद में क्षमा मांग लेंगे प्राश्चित ले लेगे। ये हो सकता है कि- कृपालु गुरु आपको क्षमा कर दें प्राश्चित भी दे दें लेकिन इतने मात्र से तुम्हें जो प्रसाद (प्रसन्नता) भाव मिलना चाहिए वह नहीं मिल पाता। आचार्यों की आंतरिक प्रसन्नता अनुशासित, विनयी, आज्ञावान आदि गुणों से युक्त विरले ही शिष्यों पर होती है और सच्ची मात्रा में वे ही शिष्य जीवन में उन्नति और उत्थान को प्राप्त करते हैं। लोग उनके पीछे भागते हैं महाराज श्री, आप कौन सी जाप्य करते हैं कौन सा मंत्र पढ़ते हैं। एक दो महाराजों ने तो डारेक्ट मुझसे पूछा- विरागसागर जी आप कौन सा मंत्र पढ़ते हो मैंने कहा- क्यों? बोले इतनी अधिक २५-२५, २६-२६ दीक्षाएँ एक साथ दे देते हो मुझे तो एक भी शिष्य नहीं मिलता। मैंने कहा- मैं णमोकार मंत्र पढ़ता हूँ, दीक्षा देने और संघ बढ़ाने के लिए कोई मंत्र नहीं पढ़ता।

जब तपस्वी सम्राट गुरुदेव सन्मतिसागर जी के साथ करगुवां में हमारा संघ था तो वहाँ कुमुदनंदी महाराज ने सन्मति सागर जी गुरुदेव से कहा- महाराज विरागसागर जी को आपने कौन सा आशीर्वाद दिया है कि उनके १४-१५ शिष्य हैं। महाराज ने कहाँ- हाँ, इतने ही नहीं वह तो और भी बहुत सारी दीक्षा देगा। कुमुदनंदी ने कहा- मुझे भी ऐसा आशीर्वाद दे दो। तो महाराज बोले जो मुझे देना था वह दे दिया।

जब हम लोग उदगांव चातुर्मास के बाद विहार करने लगे उस समय मैंने पूछा- गुरुदेव संघ में किसी महाराज आदि में कोई त्रुटि दिखी हो मिस्टेक दिखी हो तो बतला दीजिये हम उसका सुधार करायेंगे। महाराज मुस्कुराकर बोले- ऐसा तो कुछ भी नहीं दिखा। तो मैंने कहा- गुरुदेव हमें ऐसा कोई सूत्र दीजिए जो हम लोगों के कल्याण हेतु बने। महाराज बोले- विरागसागर जी आज तक आप जो उठे हो केवल गुरुभक्ति से उठे हो और आगे भी जितनी भी उपलब्धियाँ पाओंगे, उठोगे तो केवल गुरुभक्ति से उठोगे, तुम्हारी गुरु भक्ति में कोई कमी नहीं है इसलिए तुम्हारी उन्नति में कभी कोई कमी नहीं आयेगी। इसके बाद हमारे महाराज लोगों ने भी बोला- महाराज हमें भी कोई सूत्र दो बोले- आप सभी की उन्नति भी गुरु भक्ति से होगी।

बन्धुओ! गौतम गणधर ऐसे ही नहीं बन गये, उनकी भक्ति ने उन्हें गणधर बनाया। लोग गितनी गिनते हैं इन्हें दीक्षा लिए इतने वर्ष हो गये और इन्होंने अभी दीक्षा ली। आचार्य बन गये। अब कहो भगवान महावीर स्वामी ने गौतम को गणधर क्यों बनाया। उनसे भी पहले के दीक्षित कम से कम ६५ दिन पुराने दीक्षित साधु तो थे ही, समवशरण में वे गणधर क्यों नहीं बने, ये सब आत्म विशुद्धि का प्रतीक है। लोग कहते हैं एक आचार्य कितने आचार्य बना सकते हैं। मैंने कहा- यह विषय तीर्थंकर भगवान से पूछो कि एक तीर्थंकर कितने गणधर बना सकते हैं। गणधर यानी आचार्य गणधर कहो, गण नायक कहो, गणपति कहो, गणाचार्य कहो, सभी पर्यायवाची शब्द हैं। सबसे अधिक गणधर सुमतिनाथ भगवान के ११५ अथवा ११६ गणधर थे। कोई कहे इतने गणधरों की क्या आवश्यकता है? तो आवश्यकता है क्योंकि उनका नियोग ऐसा है उनके पुण्य में उनके भाग्य में इतने गणधर हैं उसे कोई रोक नहीं सकता। कोई बदल नहीं सकता।

कहना का तात्पर्य बस इतना है कि आज के समय में ऋद्धि सिद्धि का कोई उपाय है, संकट निवारने का यदि कोई उपाय है तो वह अन्य कोई तंत्र-मंत्र नहीं सबसे बड़ा उपाय गुरु कृपा है। इसलिए गुरु की प्रसन्नता जीवन में बनी रहना चाहिए। सब कुछ जाये, कुछ भी न मिले कोई परेशानी नहीं है लेकिन गुरु कृपा मिलती रहना चाहिए। गुरु का आशीष उनकी प्रसन्नता बनी रहना चाहिए तो सब कुछ तुम्हे मिल जायेगा। लेकिन जो सब कुछ पाने में गुरु की प्रसन्नता उनकी कृपा को छोड़ देता है उसे सब कुछ मिलकर भी कुछ नहीं मिल पाता।

तीसरी एक और महत्वपूर्ण बात है सभी कहते हैं कि जीवन में गुरु होना चाहिए लेकिन इसके रहस्य को कतिपय

लोग नहीं समझ पाते और वे निश्चित किन्हीं व्यक्ति विशेष से बंध जाते हैं वहीं तक सीमित रह जाते हैं उन्हें ही गुरु मानने लगते हैं यह बहुत बड़ा धोका है। आपको पता होगा कई समाजों में केवल गुरुओं के कारण अनेक टुकड़े हो गये हैं। गुरुओं से भी मेरा यही कहना है वे अपने हृदय को संकीर्ण न बनायें। व्यक्ति को अपने आपसे नहीं उसे धर्म से जोड़े। हमारे शास्त्र भी कहते हैं कि गुणों से जोड़ों। गुण ही अर्थात् रत्नत्रय ही गुरु है।

हमारे शास्त्रों में उल्लेख मिलता है कि गुरु दो प्रकार के होते हैं एक दीक्षा गुरु, दूसरे शिक्षा गुरु, बाकी सभी सामान्य गुरु हैं। जिससे हम दीक्षा लेते हैं जिन्होंने हमें संस्कार, पिच्छी, कमण्डल दिये हैं वे हमारे प्रधान गुरु हैं दीक्षा दाता गुरु हैं और जिनसे हमने शिक्षा ग्रहण की है वे शिक्षा गुरु हैं। दीक्षा गुरु एक ही होता है ये बात अलग है किसी से प्रतिमाा ली हैं क्षुल्लक, ऐलक दीक्षा ली है लेकिन अंत में जिनसे मुनिदीक्षा ली जाती है वे हमारे प्रधान उपकारी गुरु कहे जाते हैं। उनके उपकारों को कभी नहीं भूलना चाहिए। शिक्षा गुरु और सामान्य गुरु तो बहुत सारे होते हैं। जब हम देव, शास्त्र, गुरु की पूजा पढ़ते हैं तो वहाँ कहा गया है ३६,२५ २८ मूलगुणों के धारी जितने भी साधु है वे सभी हमारे गुरु हैं। कातंत्र व्याकरण के लेखक आचार्य ने भी लिखा है-

गुरुभक्त्या वयं सद्धि द्विपद्वितय वित्तिनः।
वंदामहे त्रिसंख्योन नवकोटि मुनिश्वरान्।।४।।

अर्थात् ढ़ाईद्वीय में रहने वाले ३ कम नौ करोड़ ६वे गुणस्तान से लेकर १४वें गुणस्थान तक के सभी गुरु रत्नत्रय धारी होते हैं। हमें यही देखना चाहिए कि रत्नत्रय धारी हों ३६,२५ अथवा २८ मूलगुणों को पालन करने वाले हों अपने गुरु की आज्ञा अनुशासन में रहने वाले हों वे सभी हमारे गुरु हैं। जब ऐसी उदारता व्यक्ति के अंदर आ जाती है तो उसका **णमो लोए सव्व साहूणं**- मंत्र पढ़ना सार्थक हो जाता है।

आज समस्या यहाँ खड़ी है व्यक्ति णमोकार मंत्र तो रोज पढ़ते हैं फिर भी कहते हैं गुरु अमुख है। भैया बतलाओं आपने एक को गुरु कहा तो अब ४ कम नौ करोड़ का क्या होगा? सव्वसाहूणं का अर्थ क्या आप भूल गये या अपने मन माफिक अर्थ कर लिया। हम केवल अपने स्वार्थ को न देखे अपितु सच्चे निर्ग्रन्थ दिगम्बर वीतरागी को देखें सभी पर समान श्रद्धा, आस्था रखें।

गुरुजन भी उदार बनें वे अपने स्वार्थवश किसी भोले प्राणी को गलत शिक्षा न दें अपने से बांधकर न रखें अपितु निर्ग्रन्थता से बांधे। ये सत्य है जो उदारता रखता है उसे उतनी ही उदातरा प्राप्त होती है। कितने लोग आकर मुझसे कहते हैं कि मुझे पहले ऐसे गुरु मिले हैं जो कहते हैं सभी के पास जाओ। सभी निर्ग्रन्थ पिच्छि धारियों की सेवा करो इसलिए मेरा मन बार-बार यहाँ आने को करता है। अभी तक तो मैं जहाँ भी गया किसी ने ऐसी उदारता नहीं दिखाई। सभी यही कहते थे अरे! वहाँ नहीं जाना, उनके पास नहीं जाना, उनकी सेवा नहीं करना, उनके लिए चौके नहीं लगाना। लेकिन आपकी बात तो मुझे सबसे निराली लगी कि सभी जगह जाने की बात कहते हो इसलिए मैं सब से ज्यादा यहीं आता हूँ।

बन्धुओ! मेरा सोच है यदि यह विशालता सभी साधुओं के अंदर में आ जाये तो समाज-समाज की फूटन दूर हो जायेगी। नगर-नगर के विसंवाद नष्ट हो जायेंगे। हम पड़ौसी और पूरे परिवार में खुशहाली छा जायेगी। तुम भी सब के पास चलो, हम भी सब के पास चलें रत्नत्रयधारी सभी गुरु हमारे लिए एक समान हैं। यदि ऐसा कुछ पुरुषार्थ हुआ तो हम सभी की गुरुपूर्णिमा सच्चे मायने में सार्थक और सफल हो जायेगी।

आज के दिन हम अपने गुरुदेव आचार्य विमलसागर जीएवं आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के असीम उपकारों को याद कर उनके चरणों में नमस्कार करते हैं आप हमारे लिए सदैव मार्गदर्शक बने रहें ऐसी पवित्र भावना के साथ।

।। जय बोलिए महावीर भगवान की जय।।

वीर देशना का उद्‌गम

प्रवचन- प.पू. युगप्रमुख श्रमणाचार्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी गुरुदेव

बन्धुओ! हम सभी आज वीर शासन जयंति पर्व को मनाने के लिए एकत्रित हुए है। कल हम सभी ने देखा कि गौतम गणधर भगवान के समवशरण में दिगम्बर तपस्वी महान संत के रूप में उपस्थित हो चुके थे। उनकी आत्म विशुद्धि ने एक साथ चार काल उत्पन्न कर दिये ऋद्धियों की सिद्धियों उन्हें हुई उसी क्षण प्रभु महावीर स्वामी की दिव्य देशना प्रारंभ हो गई।

हालाकि मूलाचार के कथनानुसार इन्द्रभूति गौतम ने पहले भगवान महावीर स्वामी से प्रश्न किये थे। कतिपय लोगों की धारणा है कि गणधर के अभाव में भगवान महावीर प्रभु की दिव्य ध्वनि नहीं खिरी थी लेकिन यह सिद्धान्तिक समाधान नहीं हैं क्योंकि बिना गणधर के भी दिव्य देशना खिर सकती है। जिन्होंने आदि पुराण (महापुराण) का प्रथम खण्ड पढ़ा है उन्हें याद होगा कि जिस समय ऋषभनाथ भगवान को केवलज्ञान हुआ था उस समय भरत चक्रवर्ती को तीन लाभ एक साथ हुए थे। प्रथम सुसमाचार मिला था कि ऋषभनाथ भगवान को केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। दूसरा सुसमाचार मिला आपके यहाँ पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई है और तीसरा सुसमाचार यह मिला था कि आयुधशाला में चक्ररत्न की प्राप्ति हुई है।

तीनों सुसमाचार सुन चक्रवर्ती सोचने लगे पहले कौन सा उत्सव मनाया जाये कोई सोचता पहले पुत्र जन्मोत्सव मनाये, कोई पहले चक्ररत्न उत्पत्ति का महोत्सव मनाता लेकिन भरत चक्रवर्ती क्षाथिक सम्यग्दृष्टि जीव थे उन्होंने अपनी प्रज्ञा से निर्णय लिया कि तीनों पुरुषार्थों में से पहले धर्म पुरुषार्थ का उत्सव मनाना चाहिए। वे सबसे पहले तीर्थंकर ऋषभदेव के समवशरण में पहुँचते हैं। वहाँ भगवान की पूजन, भक्ति, वंदना करके श्रावकों की सभा में बैठ जाते हैं उसी वक्त ऋषभदेव की दिव्य देशना प्रारंभ हो जाती है। उस वक्त एक भी गणधर वहाँ पर नहीं थे इससे स्पष्ट होता है कि बिना गणधर के भी भगवान की दिव्य देशना खिर सकती है। दर्शन स्तुति में भी पढ़ते हैं-

भवि भागन वश जोगे वसाये।
तुम ध्वनि है सुन विभ्रय नसाये।।

भव्य प्राणियों के भाग्य (पुण्य) से भगवान की दिव्य देशना खिर सकती है उस समय गणधर की परमावश्यकता नहीं होती। आपके मन में प्रश्न उठ रहा होगा कि भगवान महावीर स्वामी की ६५दिन तक दिव्य देशना क्यों नहीं खिरी? इसका कारण यह भी था कि दिव्य देशना के लिए प्रज्ञा सम्पन्न क्षयोपशमवान एवं अत्यंत पुण्यवान व्यक्ति होना चाहिए लेकिन भगवान महावीर स्वामी के समवशरण में ६५ दिन तक ऐस एक भी व्यक्ति उपस्थित नहीं हो सका जो भगवान की दिव्य देशना को झेल सके, ऐसा धवला जी में उल्लेख मिलता है।

बिना गणधर के भी यदि सभा में कोई ऐसा व्यक्ति होता तो भी भगवान की दिव्य देशना खिर सकती थी। और यदि निश्चय नय से कथन करें तो उस समय काल-लब्धि नहीं आई थी इसलिए भगवान की दिव्य देशना नहीं खिरी, ऐसा योग्य उपादान की तत्क्षणवर्ती पर्याय का उदय नहीं हुआ था जो कि गौतम गणधर के पहुँचते ही प्राप्त हो गई और दिव्य देशना खिरने लगी। प्रश्न तो बहुत सारे लोगों के मन में आये होंगे लेकिन उनमें सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न इन्द्रभूति गौतम गणधर ने भगवान महावीर स्वामी से किया कि-

कधं चरे, कधं चिट्ठे कध मासे, कधं सए।
कधं भुंजीज्ज भासेज्ज जदो पावं ण बंधई।।

इतने सरल प्रश्न किये बड़ा आश्चर्य है कि इतने बड़े चार ज्ञान के धारी, जिनके ज्ञान में सब समाधान थे तीव्र क्षयोपशम भी ज्ञान का था वे इतनी छोटी-छोटी बातों को पूछें, लोगों को तो आश्चर्य होता है लेकिन सत्य यह है कि गौतम गणधर कोई सामान्य व्यक्ति नहीं थे वे गणधर थे, गणनायक थे, गणेश थे १२ सभाओं के अधिपति थे। उनके हर प्रश्न में १२

सभाओं के हर व्यक्ति का प्रश्न समाविष्ठ था। महापुरुषों के प्रश्न केवल अपनी ही जिज्ञासा को लेकर नहीं होते हैं उनकी जिज्ञासा में सभी की जिज्ञासा का समावेश होता है। उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर सिर झुकाकर प्रश्न पूछा हे प्रभो! **कधं चरे** हम सभी को कैसे चलना चाहिए। आज कल के व्यक्ति प्रश्न पूछते हैं महाराज हमारा भी एक प्रश्न है शायद इस प्रकार यदि गौतम गणधर प्रश्न पूछते तो उन्हें कोई उत्तर नहीं मिलता। उत्तर नम्रताशील व्यक्ति को दिया जाता है विनयवान व्यक्ति को दिया जाता है। उन्होंने बड़ी विनय और सम्मान से प्रश्न पूछा क्योंकि आप कुछ लेना चाहते हो तो सबसे पहले झुकना पड़ता है बिना झुके कुछ प्राप्त नहीं हो सकता है। कुएँ में हम बाल्टी डालते हैं वह बाल्टी तभी भर सकती है जब वह झुकती है। यदि बाल्टी पानी की सतह पर बैठ जाये झुके न तो वह भर नहीं सकती हैं। बाल्टी को झुकना पड़ता है और इतना झुकना पड़ता है कि पानी की सतह से भी कुछ नीचे जाना पड़ता है तब कहीं वह भर पाती है।

कितनी बड़ी बात है मुझे लगता है अपन लोग भर ही नहीं पायेंगे क्योंकि झुकने में शर्म लगती है झुकने में संकोच लगता है। हमारा अभिमान, अहंकार हमें झुकने नहीं देता है और जब तक झुकेंगे नहीं तब तक भर नहीं पायेंगे, भरना है तो झुकना सीखिये। ऊपर नहीं नीचे बैठना चाहिए। लोटे को नल की टोंटी के ऊँपर रख दीजिए भरेगा क्या? नहीं नल की टोंटी पर रखा लोटा भर नहीं सकता उसे नीचे होना पड़ेगा तभी वह भर सकता है।

तीर्थंकर भगवान के प्रथम शिष्य गौतम गणधर की चर्या ही उपदेश दे रहे थे आप कितने ज्ञानी हैं इसकी परीक्षा आपकी भाषा, आपका व्यवहार और आपकी चर्या दे देती है। केवल हमने इतने सारे शास्त्र पढ़े हैं रटे है कण्ठस्थ किये हैं इसका कोई महत्व नहीं होता उसकी कोई परीक्षा नहीं लेता। ज्ञान की परीक्षा तो आचरण, भाषा और व्यवहार है। जैसे-जैसे पेड़ फलीभूत होता है उतना-उतना वह झुक जाता है वांस बहुत ऊँचे-ऊँचे खड़े रहते हैं लेकिन वे झुक नहीं पाते कारण उनमें फल नहीं लगते फलीभूत हमेशा झुकता है ज्ञान का भी यही लक्षण है ज्ञान जब आत्मसात होता है तो व्यक्ति स्वयं झुक जाता है।

गौतम गणधर ने प्रश्न पूछा-भगवान! बतलाईये हम कैसे चलें। आज का कोई व्यक्ति होता तो कहता यह भी कोई प्रश्न है यह भी कोई बात करने का तरीका है। इतने महान तीर्थंकर महापुरुष से इतने छोटे प्रश्न किये जाते हैं पता नहीं लोग क्या-क्या सोच सकते हैं लेकिन गौतम गणधर के मन में जो आया उन्होंने प्रश्न कर दिया हम कैसे चलें, इसके उत्तर में भगवान कहते हैं-

जधं चरे जदं चिट्ठे जद मासे जदंसये।
जदं भुंजीज्ज भासेज्ज एवं पावं जदंसये।।

यत्न पूर्वक चलिये, पानी बरस रहा है और जमीन पर मार्बल, ग्रेनाइट के चिकने टाल्स लगे हैं अथवा मिट्टी भी चिकनी होती है पिसलन हो सकती है। अत: सावधानी से चलिये ताकि आप धौके में न आ जायें, कहीं फेक्टर न हो जाये, कहीं गिर न जाएँ, चोट न लग जाये, तकलीफ न हो जाये।

शासन ने बहुत कुछ नियम केवल चलने के विषय में बनाये हैं जब भी चले तो मात्र एक ही तरफ न देंखे सामने भी देखों, इस बाजू भी देखों, उस बाजू भी देखों, वायी साइड से चलिए। यद्यपि अभी नियम में भी कुछ परिवर्तन हुआ है गुजरात सरकार ने एक नया नियम बनाया कि पैदल चलने वाले दायी साइड से चलें, ताकि सामने से आने वाले वाहनों को देख सकें और यथा संभव अपने बचने का रास्ता निकाल सकें। दौड़कर नहीं चला चाहिए, सोच समझकर सावधानी से जाईये। शास्त्र कहते हैं जीव की रक्षा कीजिए, नीचे कोई जीव जन्तु न हो, कहीं कोई कांटे आपको न लग जाये, कोई जीव जन्तु आपको काट न ले, कहीं आप किसी गड्डे में न गिर जाये, किसी वाहन आदि से एक्सीडेन्ट न हो जाये, इस प्रकार यत्न पूर्वक चलिए अनावश्यक नहीं चलें। भगवान तो यह कहते हैं आत्मा में रमण कीजिए आपका हर कदम आत्मभिमुख होना चाहिए। जिन साधकों का आत्माभिमुख ध्यान होता है उनके कदम सदैव संभले रहते हैं।

एक माँ अपने छोटे से बच्चे को लेकर मंदिर गई तो बेटा भगवान की मूर्ति को देखकर कहता है माँ भगवान चलते

क्यों नहीं है ? ये पैर पर पैर रखकर क्यों बैठे हैं ? माँ कहती अरे ! चुप रह, ज्यादा बात करता है। क्यों ? माँ के इस प्रकार कहने का कारण ही है बेटे के प्रश्नों का उत्तर उसके पास नहीं हैं। माँ को ही पता नहीं है। वह प्रश्न उठाता है, माँ चुप कर देती है तो वह चुप हो जाता है। पर ध्यान रखें यदि माँ को प्रश्न पता है और पता न भी हों तो पता करें गुरुओं से पूछे, शास्त्रों को पढ़े और उत्तर खोजकर बच्चों के प्रश्नों का समाधान करे। स्वाध्याय शीला जो माँ होती है उसके अंदर ज्ञान विकसित होता है वह माँ कहती है बेटा भगवान का ये आसन इस बात का प्रतीक है कि संसार में खूब घूमा है लेकिन कहीं भी सुख, शांति नहीं मिली।

चोदह राजु उतंग नभ लोक पुरुष संठाण।
तामें जीव अनादि ते, भरमत है बिन ज्ञान।।

आज तक जीव इसमें भटक रहे है कोई कहता है धन दौलत से सुख मिलेगा कोई कहता है कुटुम्ब, परिवार से सुख मिलेगा लेकिन जीव को कहीं भी सुख नहीं मिला। अंत में सभी ने यही कहा यह मात्र हमारा भ्रम था। सम्यग्ज्ञान के अभाव में व्यक्ति संसार और संसार की वस्तुओं में सुख मानता है लेकिन ज्ञान जाग्रत होने पर उसे मालूम होता है कि सुख बाह्य जगत में नहीं अंतर आत्मा से प्राप्त होता है वह आत्मा का गुण है।

बन्धुओ ! आज के दिन हम सभी तीर्थंकर भगवान की दिव्य देशना का पान करें उसे आचरण में उतारे। कितनी बार भगवान ने उपदेश दिया कहा है-

श्री वीर ने सुपथ यद्यपि था दिखाया, था कोटिशः सदोपदेश हमें सुनाया।
धिक्कार किन्तु हमने उसको सुना ना, मानो सुना पर नहीं उसको गुना ना।।

भगवान महावीर स्वामी ने हमें मोक्ष का रास्ता दिखाया, करोड़ों उपदेश दिया किन्तु हमने उसे सुना ही नहीं और कभी सुना भी तो इस कान से सुना उस कान से निकाल दिया। कभी उसका चिंतन, मनन नहीं किया। हमारा मोह अथवा मिथ्यात्व इतना प्रबल रहा कि वास्तविक सत्य पर हमारा ध्यान ही नहीं गया इस बात का हमें धिक्कार है ऐसा ज्ञानी पुरुष सोचते हैं। ज्ञान की गहराई में जाने पर व्यक्ति को महसूश होता है ओहो ! हम कहाँ भटक रहे हैं आज तक हम सच्चे मार्ग पर नहीं चल पाये हैँ। हमारे बीच आज साक्षात् तीर्थंकर भगवान नहीं हैं क्योंकि यह पंचम काल है यदि आज चतुर्थकाल होता तो हमारे बीच साक्षात् तीर्थंकर भगवान समवशरण में विराजमान होते और हम सभी उनकी दिव्य देशना का रस पान करते। लेकिन वर्तमान में इतना सौभाग्य वहीं है लेकिन इतना तो अश्वय है कि भगवान की वाणी आज भी मौजूद है। दिगम्बर श्रमण परम्परा में अनेकों ऐसे श्रमणाचार्य हुए जिन्होंने जिनेन्द्र देव की वाणी को शास्त्रों में लिपिबद्ध किया। यही कारण है कि जिनवाणी का एक-एक अक्षर प्रमाणित है।

आज वीर शासन जयंति मनाने के साथ-साथ हम सभी यह भी नियम लें कि शास्त्रों का स्वाध्याय करें। प्रायः आज का व्यक्ति इधर-उधर के न्यूज पेपर पढ़कर पत्र पत्रिकाएँ देख-पढ़कर समय खराब कर देता है लेकिन इसकी अपेक्षा यदि वह प्राचीन आचार्य प्रणीत किसी एक शास्त्र का १० मिनट भी स्वाध्याय कर ले तो उसके जीवन में एक नयी उपलब्धि हो सकती है। और यह भी सत्य है जो उपलब्धि शास्त्र से जीवन में होती है वह अन्य किसी से नहीं हो सकती। वीर शासन जयंति हम सब के ज्ञान चक्षु को खोलने वाली बने हमारे जीवन में नया उत्साह, नया परिवर्तन लाने वाली हो।

आज के दिन यह भी ध्यान रख लीजिए क्षयोपशम बढ़ाने के लिए शास्त्र भेंट आवश्यक है तो चिंतन मनन के लिए स्वाध्याय भी आवश्यक है। यदि कोई मेटर ही नहीं होगा तो क्षयोपशम किस दिशा में गति देगा। अतः स्वाध्याय करें और उससे भी महत्वपूर्ण यदि किन्हीं निर्ग्रन्थों के श्रमण, श्रमणियों के प्रवचन सुनने का अवसर प्राप्त हो तो उसे जरूर सुनें क्योंकि शास्त्र आप दो, चार ही पढ़ सकते हैं लेकिन प्रवचनों में अनेकों शास्त्रों का सार प्राप्त हो जाता है कई शास्त्रों की गाथा, श्लोक कहानियाँ एक प्रवचन में प्राप्त हो जाती है इसलिए जिनवाणी के प्रति अपनी आस्था जगायें और जीवन को एक नई दिशा की ओर मोड़ दें।

जिज्ञासाओं का समाधान

समाधानकर्ता - प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

जिज्ञासा- नमोस्तु गुरुदेव! हम श्रावकगण प्रात: उठकर क्या करें? मेरी शंका का समाधान कीजिए।

समाधान- यद्यपि शंका होना अच्छी बात नहीं है। देव, शास्त्र गुरु के विषय में शंका होना बहुत बड़ा दोष माना गया है इसलिए शंका नहीं करनी चाहिए। हाँ ज्ञान के विषय में जो समझने की इच्छा रहती है उसे हम जिज्ञासा कहते हैं। जब हम स्वाध्याय अथवा गुरुओं के प्रवचन ध्यान पूर्वक सुनते हैं तो निश्चित है जिज्ञासा उत्पन्न होती है और होना भी चाहिए क्योंकि इसका मतलब है कि आपने ध्यान दिया है सोते-सोते अथवा बातों में समय व्यतीत नहीं किया है।

मन में जिज्ञासा उठी है इसका अर्थ है आप कुछ जानना चाहते हैं। मुनष्य की परिभाषा ही यही है जो मननशील होता है अपने हित अहित के विषय में जानता है अथवा जानना चाहता है वही वास्तविक में सच्चा मनुष्य हैं।

आपकी जिज्ञासा है हम प्रात: उठकर क्या करें?

प्रात: काल जैसे ही उठें तो आँख खोलने के पूर्व पालकी लगाकर बैठे जाएँ और अपने आराध्यदेव का स्मरण करें वे इष्टदेव हमारे नगर अथवा कोई भी तीर्थक्षेत्र में विराजमान प्रतिमा अथवा हमारे गुरु भी हो सकते हैं। आप उन्हें निहारियें और इतनी एकाग्रता से निहारे कि वे साक्षात् की तरह आपके हृदय में दिखने लगें। यदि आपको अपने आराध्यदेव स्पष्ट दिख रहे हैं इसका मतलब है आपका मन एकाग्र है, चंचल नहीं है। आप अपने आराध्य के चरणों में कम से कम एक कार्योत्सग करें। ध्यान रखें उठते ही अंगुलियाँ न चलायें, मुख से उच्चारण भी न करें क्योंकि सोते में हाथ आदि की शुद्धि नहीं रहती इसलिए मन में ही स्मरण करें। फिर स्नान कर भगवान की कोई न कोई एक स्तुति करना चाहिए। फिर जाप सामायिक जो भी करना हो, व्रती श्रावकों को प्रतिदिन प्रतिक्रमण जरूर करना चाहिए। फिर मंदिर में जाकर दर्शन, पूजन करें।

लौकिक दृष्टि से हर व्यक्ति चाहता है कि हमारे घर-परिवार में शांति रहे सभी में हर्ष खुशी रहे इसलिए उठकर अपने से बड़े माता पितादि के चरण स्पर्श करना चाहिए, जो समकक्षी अथवा छोटे हैं उनसे जय जिनेन्द्र बोलना चाहिए। ऐसा करने से परस्पर में सौहार्दता बढ़ती है सभी में प्रेम वात्सल्य भाव बढ़ता है। जब कभी हमें अपनी पहचान के अथवा आस-पास के लोग दिखे तो उनसे जय जिनेन्द्र जरूर बोलना चाहिए इससे बिना बोले ही आपके जैनत्व की पहचान हो जाएगी।

जिज्ञासा- अनीता डगड़ा- जब हम रात्रि अन्न जल का त्याग करते हैं और हारी बीमारी की छूट ले लेते हैं तो उसका फल हमें मिलेगा या नहीं?

समाधान- ध्यान रखिये मौके पर जीत गये तो जीत गये और मौके पर हार गये तो हार गये। बच्चे सालभर पढ़ाई करें स्कूल जाये और परीक्षा के मौके पर छुट्टी करें तो क्या वह पास हो सकता है? नहीं, इसी प्रकार नियम में छूट नहीं होना चाहिए। राजस्थान में नियम को आखड़ी कहते हैं जो आकर खड़ी हो जाती है। लोग छूट मांगते हैं लेकिन वास्तविक में परीक्षा की घड़ी तो वही है। यदि कोई देव आयेगा तो उसी समय प्रसन्न होगा और यदि उस समय आपने भोजन कर लिया तो वह देखकर लौट जायेगा।

आप जीवन भर दिन में भोजन कर रहे हैं वह एक सामान्य फल है लेकिन जिस दिन, दिन में नहीं खा पाये उसी दिन का ज्यादा फल मिलेगा। वही परीक्षा में उत्तीर्ण होने का समय है उस घड़ी में हमें अडिग रहना चाहिए छूट नहीं रखना चाहिए। परिस्थिति से हारना नहीं चाहिए हम अपने मन को मजबूत बनायें तो न कभी हारेंगे न बीमार होंगे। ऐसे अवसरों पर मुनिराजों का ध्यान करें तो अपने आप शक्ति प्राप्त हो जायेगी।

जिज्ञासा-मंजू सेठी, विजाति अन्तर्जाति शब्द समानार्थक हैं या इनमें कुछ भेद है?

समाधान- विजाति यानि अपनी जाति से अन्य जाति में जाना और अन्तर्जाति यानि अपनी जाति के जो अन्य भेद हैं उनमें बहू बेटियों का जाना।

जिज्ञासा- प्रभात जैन, मैं सोमवार को चंदाप्रभ और शनिवार को मुनिसुव्रतनाथ भगवान की पूजा करता हूँ लेकिन किसी ने कहा निश्चित वार के दिन निश्चित तीर्थंकर की पूजा करने में दोष है कृपया आप सच्चा मार्ग दर्शन करें।

समाधान- जो दोष बताता है उससे पूछो कौन सा दोष लगता है यदि तीर्थंकर भगवान की पूजा में दोष लगेगा तो पुण्य किसमें लगेगा। संसार में भटकाने वाले बहुत हैं सबकी बात सहसा नहीं माननी चाहिए पूछिये किस शास्त्र में लिखा है? यदि कोई २४ दिनों में २४ तीर्थंकर की अथवा ७ दिनों में ७ तीर्थंकर भगवान की पूजन करें तो उसमें दोष क्या है? भगवान की ही तो पूजा कर रहे हैं इसलिए उसमें मिथ्यात्व आदि का कोई दोष नहीं लगेगा।

अध्यात्म है हृदय को गुलशन बनाना

आचार्य विनम्रसागर जी

यदि हृदय को मन के पत्थरों से भरा जाये तो हृदय वीरान खण्डहर हो जावे, यदि मन को हृदय के फूलों से भरा जाये तो मन खूश्बू की बहार बन जावे, यदि मन हृदय की बात को स्वीकार कर ले तो मन की गति परमात्मा की ओर होती है यदि हृदय मन की बात स्वीकार कर ले तो हृदय की गति पापात्मा की ओर होती हुई दुर्गति की ओर हो जाती है। हृदय केवल हृदय की बात को स्वीकार कर अपने आप में ठहर जाये तो अध्यात्म की गति बन जाती है अपने आप में ठहर जाये तो अध्यात्म की गति बन जाती है, अपने आप में ठहर जाती है बस यही मोक्ष है, यही मुक्ति है, यही मंजिल है। हरक आदमी की ख्वाहिश मंज़िल को पाने की है लेकिन मंज़िल पाने का मतलब है मानव जीवन का ही नहीं ८४ लाख जीवनों का अंतिम पड़ाव। इसके बाद भ्रमण समाप्त हो जायेगा ऐसी मंजिल भी तब मिलेगी जब पहिले जीवन की चरम सीमा का अंगरखा ओढ़ लिया जायेगा। सारी इच्छाओं को तिलांजलि देकर दुनियाँ की ज्वालाओं में से वे गुनाह निकला जाएगा। इस गुनाहगार और लपटों से भरी इस दुनियाँ में अपने हृदय को गुणों का स्थान बनाना, अपने हृदय में प्रेम-वात्सल्य-समता-ज्ञान-शक्ति के वृक्ष लगाकर उन्हें सींचना और सुन्दर गुलशन बनाना ही अध्यात्म है। ऐसा अध्यात्म ही जीवन को चिराग बनाकर आत्मा को ज्योतिर्मय बना देता है। ऐसा ही जीवन परमात्मा को प्यारा है।

जो परमात्मा को प्यारा होता है वह हम सभी को भी प्यारा होता है वह ही दीन दुखियों का सहारा है परमात्मा की बात स्वीकार किये बिना कोई भी परमात्मा का प्यारा नहीं बन सकता है। अध्यात्म के बिना जीवन मृत तुल्य है इंसान आकाश की तरह पैदा होता है। यदि अध्यात्म अपने जीवन में पैदा न कर सका तो एक गंदी झौपड़ी की तरह मर जाता है ऐसा आदमी पूनम के चाँद की तरह जनमता है तो है पर अमावश की रात की तरह मर जाता है ऐसा आदमी चिराग की तरह जनमता है और आग की तरह मर जाता है। अध्यात्म जले हुए वल्ब की तरह है जैसे वल्ब जब जलता है तो काँच दिखाई नहीं पड़ता और बुझा हुआ हो तो काँच दिखता है रोशनी नहीं दिखती वैसे ही अध्यात्म में काँच रूपी ये शरीर दिखाई नहीं देता। शरीर दिखे तो आत्मा नहीं दिखती और आत्मा दिखे तो शरीर नहीं। अध्यात्मज्ञ को एक पेड़ में भी अपने जैसी आत्मा नजर आती है एक चींटी भी स्वयं आत्मा जैसी नजर आती है। अध्यात्म वह पैनी दृष्टि से पैदा होता है जिसमें अदृश्य वस्तु भी स्पष्ट दिखाई देती है। हृदय को खुले आकाश की तरह विशाल बनाना व जीवन को गुलशन बनाने से ही अपने जीवन को सफल बनाया जाता है। यही मानव जीवन की सार्थकता है।

मन की तृष्णा ज्ञान के अंकुश से मिटती है

संकलन- विमर्शसागर जी महाराज

ज्ञान मन को नियंत्रित करता है। मन ज्ञान को अज्ञान बनाने का प्रयत्न करता है। मन की तृष्णा ज्ञान के अंकुश से ही समाप्त होती है। मन भोग में सुख की कल्पनायें संजोता है। मन देह सुख की चिता पर सुलाता है। पद और पदार्थों में रमना मन की नियति है। मृत्यु को भुलाकर मौत के मुख में ले जाना मन का काम है। मनुष्य जितना अपने पूर्वकृत कर्म से दु:खी नहीं, उतना अपने मन के छलियापन से दु:खी है। इस मन के आकाश में ज्ञान का उड़ान भरना ही अज्ञान है।

मन की चंचलता को समाप्त करने के लिये हमें जप, तप, स्वाध्याय, स्तोत्र, भावनाओं का चिंतवन नियमित करना होगा। हम जितने-जितने धर्म क्रियाओं से जुड़ते जायेंगे, उतने-उतने ही मानसिक रूप से स्वस्थ होते जायेंगे। जप करते समय हमें यह विचारना होगा, कि हमें पूर्ण शांति मिल रही है। ऐसा विचार इसलिये करना है जिससे मन अशुभ में आनन्द होने का संदेश न दे पाये। जप करने से जहाँ विचारों में निर्मलता आती है, वहीं भावनायें भी चमत्कारी होती जाती हैं। जिस व्यक्ति के विचार निर्मल हैं, यदि वह प्रभु नाम के मंत्र से अपनी भावनाओं को मंत्रित करता है, तो वह भावनायें ही औषधि का काम करती हैं। जबकि अशुभ विचारों से भरा हुआ चित्त बीमारियों को आमंत्रण देता है।

तप के माध्यम से उन अशुभ कर्मों की निर्जरा होती है, जो हमें मानसिक, वाचिक और कायिक रूप से रुग्ण करने का कार्य करते हैं। तप के अभाव में सत्ता में स्थित ये कर्म, योग्य समय पर उदय में आकर मनुष्य को विक्षिप्त करते हैं। इसलिये जप की सार्थकता के लिये तप का होना भी अनिवार्य है। स्वाध्याय करने से ज्ञान का विकास होता है। ज्ञान के विकास से मन की उद्दण्डतायें ह्रासता को प्राप्त होती हैं। ज्ञान के द्वारा मन की विपरीतता को जाना जा सकता है। मन की विपरीतता को जानकर जप-तप-स्तुति के माध्यम से संतुलित जीवन जीने की दिशा में एक कारगर व सार्थक कदम उठाया जा सकता है।

कार्योत्सर्ग यानी उपाधि को तिलांजलि

(कृतिकार- आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज)

भो ज्ञानघनात्मन्! कार्योत्सर्ग की भूमिका तेरी निजोन्नति की आद्य भूमिका है। कायोत्सर्ग के अभाव में तेरा विकास संभव नहीं, क्योंकि कायोत्सर्ग के बिना साधक वजनदार होता जाएगा, जिससे पतित होना स्वाभाविक है और डूब जाएगा भवसिंधु में। अत: कायोत्सर्ग उभरने का अनुपम मार्ग है। **कायोत्सर्गादि करणं व्युत्सर्ग:** आचार्य भगवान् पूज्यपाद स्वामी ने महान ग्रंथराज **सर्वार्थसिद्धि** में बतलाया है (जो कि जिनेन्द्रदेव की दिव्यध्वनि से, गुरु-परंपरा से प्राप्त हुयी कायोत्सर्ग की विधि) शरीरादि से ममत्व का त्याग यानी शरीर का भी उत्सर्ग करना कायोत्सर्गक है। इसी का नाम व्युत्सर्ग है। मात्र नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ लेना कायोत्सर्ग नहीं है, अपितु पढ़ने के साथ-साथ देहके प्रति रागबुद्धि का भी त्याग होना चाहिए। **व्युत्सर्ग** को आचार्यों ने अनेक कोटियों में रखा है। व्युत्सर्ग तप भी है, षड़ावश्यक कर्तव्यों में अंतिम कर्तव्य भी और प्रायश्चित के भेदों में एक भेद भी है। व्युत्सर्ग का उत्कृष्ट काल १२ माह (१वर्ष) एवं जघन्य अंतर्मुहूर्त व मध्यम अनेक प्रकार का काल समझना चाहिए। **तत्त्वार्थ सूत्र** जी में व्युत्सर्ग के दो भेद किए हैं- बाह्य और अभ्यंतर उपाधि का त्याग। आत्मा से भिन्न पदार्थों को बाह्य उपाधि कहा है, जैसे अन्न, धन्यादि, शिष्य-शिष्याओं का समूह और अभ्यंतर उपाधि में है उनके प्रति राग, क्रोधादि विकार। इनका त्याग ही सच्चा व्युत्सर्ग-कायोत्सर्ग है। **आत्मीय संकल्प त्यागो व्युत्सर्ग:** ममकार रूप संकल्प-विकल्प का त्याग ही व्युत्सर्ग तप है। यदि आँखों को बंदकर खड़े होकर घंटों ध्यान करते रहो और अंदर से बैठे हो, मानसिक संकल्प-विकल्पों में जी रहे हो, तो तेरा यह सच्चा व्युत्सर्ग नहीं। अंदर-बाहर से खड़े होकर सभी प्रकार के संकल्प-विकल्पों से विराम लेकर निजात्म-विशुद्धि हेतु कायोत्सर्ग करना ही वास्तविक कर्त्तव्य है। अत:हे योगी! कायोत्सर्ग की पटरी पर दौड़ लगा।

- 'निजात्म तरंगिणी' से साभार

श्री कुलभूषण देशभूषण की निर्वाण भूमि

संकलन मुनि विशेषसागर

भारतवर्ष धर्मभूमि है। यहाँ अनेकानेक तीर्थंकरों और मुनियों ने धर्म एवं आत्मसाधना कर आत्मकल्याण किया है। समस्त कर्मों को नष्ट कर मुक्ति प्राप्त की है भारत वर्ष में अनेक अतिशय क्षेत्र विसद्ध क्षेत्र हैं उनमें सुदूर दक्षिण में स्थित कुंथलगिरि अंतिम छोर पर स्थित है, कुलभूषण देशभूषण मुनियोंक के निर्वाण से यहाँ का कण-कण पावन पवित्र हो गया है, दक्षिण की यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए यह पावन मनोरम तीर्थ स्थल एक शांत विश्रामभूमि है।

यह सिद्धक्षेत्र महाराष्ट के उस्मानाबाद जिले के भूम तालुके में स्थित है। औरंगाबाद-सोलापुर महामार्ग पर सोलापुर से १२५ किमी. तथा औरंगाबाद से १९० किमी. सरमकुंडी गाँव से केवल तीन किलोमीटर दूरी पर स्थित है। इस सिद्धक्षेत्र के विषय में निर्वाण काण्ड में उल्लेख आया है।

वंसत्थलवणणिपरे पच्छिमभायम्मि कुंथुगिरिसिहरे। कुलदेसभूषण मुणी णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

श्री क्षेत्र कुंथलगिरि सिद्ध क्षेत्र को आत्यंतिक प्राकृतिक सुषमा की पृष्ठभूमि प्राप्त है। दक्षिणोत्तर विस्तृत इस पर्वत की ऊँचाईक १७५ फीट है और पर्व की चोटी पर देशभूषण कुलभूषण स्वामी का प्रमुख मंदिर है। पहाडी पर चढ़ने के लिए २५० सीढियाँ है। शिखर पर निर्मित मंदिर के गर्भगृह में एक वैदिका पर श्री देशभूषण कुलभूषण स्वामी के पुरातन पादुकाएँ विराजमान हैं। प्रस्तुत पादकाओं के विषय में एक जनश्रुति प्रचलित है कि बावागढ़ ग्रामस्थ ब्रह्मचारी मेटाशाह हुंबड ने एक सपना देखा कि कुंथलगिरि पहाड़ी पर एक गाय अपने बछड़े को दूध पिला रही थी और उसी के ठीक नीचे जमीन के अंदर श्री देशभूषण कुलभूषण मुनिराज की चरण पादुकाएँ छिपी है। कुछ लोगों से चर्चा कर मेटाशाह ने अपने स्वप्न की पड़ताल करनी चाही। तदनुसार वे पवर्त पर विचरण करने लगे तो चोटी पर उन्हें सचमुच ही एक स्थान पर एक गाय अपने बछड़े को दूध पिलाती मिली। वहाँ पर खोदा तो उन्हें जमीन के नीचे चरण पादुकाएँ मिली। उन्हें बाहर निकालकर उन्होंने पादुकाओं के दर्शन कर उनकी विधिवत् पूजा अर्चना की और वहीं पर एक ऊँचे पाषाण पर उनकी प्रतिष्ठा कराई। बाद में संवत् १९३२ में ईडरक पीठ के भट्टारक श्रीकनक कीर्ति के अधिष्ठातृत्व में वर्तमान मंदिर की प्रतिष्ठा कर उसमें उन पादुकाओं की प्रतिष्ठापना की।

मंदिर जी में चरण चिन्हों अतिरिक्त कुलभूषण-देशभूषण भगवान् की तीन-तीन फीट ऊँची शुभ संगमरमरी तथा सवा फीट ऊँची खड्गासनस्थ प्रतिमाएँ विराजमान है। बायी और मुनि सुव्रतनाथ और शांतिनाथ भगवान की पाषाण मूर्तियाँ है। गर्भ गृह के बाहर सभामण्डप की दाहिनी और बायी ओर भगवान आदि नाथ की पद्मासन मूर्ति है। प्रवेशद्वार के पास ही श्री आदिनाथ भगवान की आर्घ पद्मासनस्थ मूर्ति है तथा दायीं ओर श्री पार्श्वनाथ भगवान् की मूर्ति है। इस मंदिर के शिखर में सीमाधर भगवान की गेहुएँ वर्ण की मूर्ति है।

पहाड़ी पर पमुख मंदिर के सम्मुख प्रांगण में प्रवेशद्वार की दाहिनी बाजू में पूर्व दिशा की ओर छोटे से मंदिर में श्री शांतिनाथ भगवान् की सवा दो फुट ऊंची श्यामल पद्मासन मूर्ति वेदी पर विराजमान है।

मुख्य मंदिर के प्रवेशद्वार की बायीं और पश्चिम की ओर आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की सल्लेखनाकुटी है। इस कुटी में पू. आ.श्री का तैलचित्र और उसके आगे वैदिक पर उनकी चरण पादुकाएँ है। पहाड़ी पर स्थित मुख्य मंदिर के सम्मुख खुले प्रांगण में दायीं ओर कमलपुष्पाकार संगमरमरी वेदी पर बाहुबली भगवान् की अठारह फुट ऊँची खड्गासन मनोज्ञ प्रतिमा है पहाड़ी के नीचे उतरते हुए दायीं और भगवान आदिनाथ मंदिर व बायीं ओर भगवान् अजितनाथ का मंदिर है।

श्री अजितनाथ मंदिर के सम्मुख आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की चरण पादुकाएँ तथा समाधि मंदिर है मंदिर के सम्मुख ५३ फुट उत्तुंग मानस्तंभ है, मानस्तंभ के सम्मुख श्री नन्दिश्वर मंदिर में वैदिक पर नन्दिश्वर भगवान् की चतुर्दिक प्रतिमा विराजमान है। उनके पीछे दो स्तंभे पर विदेह क्षेत्र के २० विद्यमान तीर्थंकरों की प्रतिमा विराजमान है।

पहाड़ की सीढ़ियाँ उतरकर नीचे आने पर पंचमेरु नन्दिश्वर मंदिर नेमिनाथ मंदिर, भगवान् महावीर मंदिर, रत्नत्रय मंदिर व भगवान महावीर स्वामी का समवसरण मंदिर है।

ज्ञातव्य हो कि यह वहीं पावन भूमि है जहाँ २० वीं सदी में सर्व प्रथम प.पू. आचार्य श्री आदिसागर जी महाराज (अंकलोकर) ने भगवान् देशभूषण-कुलभूषण को प्रतिमा के समक्ष स्वयं मुनिदीक्षा धारण की थी। उनके पश्चात् अनेकों संतों ने इस क्षेत्र पर पधार कर ध्यान-साधना करते हुए समाधि पूर्वक देह का त्याग किया।

त्याग तपस्या जानकर नतमस्तक हो गये

श्रमणी आर्यिका विशिष्ट श्री माताजी

खण्डगिरि-उदयगिरि (ओड़िशा) मेंक डेढ़ महिने प्रवासक के उपरांत विराग समोशरण तीव्र गति से बंगाल की आरे अनवरत बढ़ रहा था। ओड़िशा में विहार करते समय बहुत सारे अनुभव मिले। जिनमें से एक यह भी कि भले ही दिगम्बर साधुओं का आवागमन ओड़िशा में बहुत कम होता है कई लोग ऐसे भी है जिन्होंने कभी दिगम्बर साधुओं को नहीं देखा फिर भी जब पू. आचार्यश्री अपने विशाल संघ्ज्ञ के साथ गुजरते तो सैकड़ों की संख्या में लोग टकटकी लगाकर देखने लगते, विशेष बात यह थी कि वे सभी संघ को देखकर न तो हंसते थे और न ही मजाक उड़ाते बल्कि कई एक लोग तो आकर साष्टांग प्रणाम करते तो कोई शंख बाजने लगते, कोई पू. श्री को पैसे देने लगते, तो कोई थोड़ा विश्राम करने का आग्रह करते।

ऐसे ही एक दिन जब संघ विहार करते हुये दण्डिका पहुंचा गाँव के स्कूल में जहाँ रुकने की व्यवस्था थी वहीं संघ एक साथ बैठ गया पहुचंते ही गाँव बाले बाहर आकर खड़े हो गये और आश्चर्य मुद्रा में सभी को टकटकी लगाकर देखने लगे तभी उनमें से एक व्यक्ति ने कहा- ये सभी के सामने नग्न कैसे रहते हैं यहाँ हमारी बहू-बेटियाँ रहती हैं उनके सामने ये बाबा नग्न होकर रहें ये क्या सही हैं। तब साथ चल रहे संघपति जी ने उन्हें बताया कि ये दिगम्बर साधु है और जैन साधुओं की चर्या ही ऐसी होती है ये सम्पूर्ण भारत में परिभ्रमण करते हैं निर्तिकारी होने के कारण जिन्हें देव भी श्रद्धावनत् होकर इनकी सेवा में रत रहते हैं। सम्पूर्ण भारत में परिभ्रमण करने पर भी इन्हें कोई रोक नहीं सकता। इस तरह उन्होंने गांव वालों को सारी परिचर्या बताई, लेकिन फिर भी गांव वालों पर उतना प्रभाव नहीं पड़ा जितना पड़ना चाहिए था। इसलिए वे वहीं भीड़ लगाकर खड़े रहे। जब संघ आहार चर्या के लिये उठा तो उन्होंने देखा कि सभी साधु क्रम से सिर नीचे (ईर्या समिति का पालन करते हुये) कर सहज मुद्रा से चले जा रहे हैं जब आहार शुरु हुआ तो भी सभी केवल अंजुली में श्रावक द्वारा श्रद्धा-भक्ति से मना दिया गया। आहार कर रहे हैं यह दृश्य देखकर पुन: उन्होंने पूछा ये हाथ में क्यों लेते हैं, ऐसे खड़े होकर क्यों खाते हैं कितनी बार खाते हैं ? इन प्रश्नों की जानकारी पावे सभी इतने प्रभावित हो गये कि जब पू. गुरुदेव आहार के उपरांत ईर्यापथ भक्ति हेतु सिंहासन पर आसीन हुये- पू.श्री के आते ही सभी गांव वाले श्रद्धावनत् हो बड़े सम्मान से हाथ जोड़कर चरणों में नमस्कार करने लगे। यद्यपि उन्होंने पू.श्री से प्रश्न करना चाहा लेकिन पू. गुरुदेव का प्रताप गुण ही कह लीजिए- जो कि कोई भी व्यक्ति पू. गुरुदेव से सहसा बात नहीं कर पाता। तभी उनका तात्पर्य समझते हुये पू. गुरुदेव ने उनसे कहा व्यक्ति जन्म लेता है तो नग्न ही रहता है और जब संसार से जाता है तो भी नग्न ही जाता है। तो जो हमारा सच्चा स्वभाव है जैन साधु जीवन पर्यन्त उसी भेष में रहते है एवं जिसके अंदर विकार नहीं उसे तन को वस्त्र से ढंकने की आवश्यकता नहीं आदि,

यह सुनते ही वे सभी आश्चर्यपूर्वक श्रद्धावनत् हो गये- उनके मुख से बस ये शब्द निकल रहे थे कि वास्तव में आप सभी परमात्मा की प्रतिकृति हैं धन्य हैं आपकी कठोर चर्या और साधना।

विज्ञापन दर

रंगीन - फुल पृष्ठ	-	11000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - फुल पृष्ठ**	-	5000/-
रंगीन - हॉफ पृष्ठ	-	6000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - हॉफ पृष्ठ**	-	2500/-
रंगीन - चौथाई पृष्ठ	-	3000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - चौथाई पृष्ठ**	-	1500/-

'विरागवाणी' मासिक पत्रिका की सदस्यता एवं विज्ञापन हेतु संपर्क करें-

प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन

जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३ ☎: 0755-2789703, मो.9425016879

बगुला भक्ति भी मायाचारी

संकलन- आ. विदूषीश्री माता जी

बात उस समय की है जब राम, लक्ष्मण तथा सीता १२ वर्ष के वनवास में विहार करते हुये पम्पापुर सरोवर पर पहुँचे। वहाँ चारों तरफ की हरियाली अति मनोहर थी। उद्यान वक्षों, लताओं, वेलों तथा फल-फूल के अनेक प्रकार के वृक्षों की शोभा से शोभायमान हो रहा था। उस उपवन की निराली छटा देख सभी हर्षित थे, खुश थे। उसी सरोवर में लक्ष्मण ने एक बगुला देखा। वह योगीक की तरह बैठा था राम ने भी उसे देखा। लक्ष्मण ने उसे देख राम से कहा-भैया, यह कितना सुन्दर है देखो। राम ने कहा- देख रहा हूँ। लक्ष्मण ने कहा- नहीं भैया, देखो तो यह कितना सुन्दर है, साथ ही एक पैर खड़ा है, गर्दन को नीचे करके खड़ा है, एक योगी की तरह योग साधना कर रहा है, अभिमान से रहित है, दृष्टि भी एकाग्र हे, चंचलता नहीं है, पलक भी नहीं झपक रहा है। राम बोले- क्या बार-बार, देखो-देखो यही रट लगा रही है ? देख तो लिया है। लेकिन लक्ष्मण फिर भी राम से बार-बार आग्रह करते रहे और जब लक्ष्मण नहीं माने तो राम ने कहा- कुछ देर पहिले यहाँ विश्रांति कर लें फिर आपके प्रश्न का उत्तर देंगे। अब लक्ष्मण की उत्सुकता बढ़ जाती है और राम से कहते हैं- भैया नहीं, आप बताइये कि क्या बात है ? तब राम ने कहा कि- अगरक मैं अभी कहूँगा तो तुमको विश्वास नहीं होगा। लक्ष्मण कहते हैं- कैसे नहीं होगा ? तब राम कहते हैं- थोड़ी देर रूको बताऊँगा और उसी समय मछली उचक कर पास आती है कि वह बगुला उसे पकड़ लेता है और उड़ जाता है। राम कहते है कि- देख लिया लक्ष्मण। लक्ष्मण को बहुत आश्चर्य हुआ। राम कहते हैं-

उज्जवल वर्ण गरीब गति, एक टांग मुख ध्यान।
देखत लागत भक्त सम, निपट कपट की खान।।

इस प्रकार बगुला की तरह भक्ति नहीं करना चाहिये क्योंकि जो बाहर में बहुत अच्छी होती है लेकिन अंदर में मायाचारी रहती है।

छने जल का प्रयोग क्यों

१. छना जल विषाक्त कीटाणुओं से रक्षा करता है।
२. छने जल से जीवों की रक्षा होती है।
३. छने जल से अनेक रोगों से रक्षा होती है।
४. छने जल से पुराने रोग ठीक हो जाते हैं।
५. छने जल की मर्यादा गुणधर्म मात्र ४८ मिनिट की है इसके बाद जल को फिर से छानना चाहिये। उबले जल की मर्यादा २४ घण्टे की है।
६. जल छानने का छन्ना इतना मोटा होना चाहिए जिसमें सूर्य की किरणें आसानी से प्रवेश न कर सके।
७. पहनने वाले पुराने कपड़े का छन्ना नहीं होना चाहिये।
८. विज्ञानकों के अनुसार एक बूंद अनछने पानी में ३६४५० एवं आलग के अनुसार असंख्यात जीव होते है।
९. छन्ना वर्तन के मुख से तीन गुना बड़ा होना चाहिए।
१०. छन्ना सूती एवं सफेद वस्त्र का ही होना चाहिये।
११. पानी छानने के पश्चात् विलछनी को यथा स्थान पहुचाना चाहिये।

'संस्कार सुरभि' से साभार

आवश्यक सूचना

आजीवन (ग्यारह वर्षीय) एवं त्रिवर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है या होनेवाली है। अतः सदस्यता नवीनीकरण करा लें जिससे पत्रिका निरन्तर भेजी जा सके।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

नींबू पानी पी लीजिये

श्रमणी आर्यिका विश्वासश्री माता जी

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ हल्दीपाडा ग्राम से विहार करते हुए जा रहे थे। भीषण तपन (४५-४८ डिग्री से.) मे जहां लोग घर से बाहर निकलने में भी धबराते हैं वहीं वैराग्य के हिमालय में आसीन वीतरागता के पथानुगामी प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज जिन्हें घोर उपसर्ग परीसहों में भी सुखानुभूति हुआ करती है ऐसे वैरागी निष्पृही योगी विशाल चतुर्विध संघ के साथ जब कलकत्ता की ओर अनवरत बढ़ रहे थे तब इतने भारी तापमान में तप्त सड़क में नंगे पैर चलते हुये चतुर्विध संघ को देख द्रवीभूत एक दुकानदार तुरन्त ही नींबू पानी से भरे गिलासोंको लेकर पू. गुरुदेव के समीप आया और चरण वंदना कर विनयपूर्वक बोला- आप लोग इतनी गर्मी में चल रहे हैं इसलिये ये नीबू पानी पीलें। यह ग्लूकोज का काम करेगा नहीं तो चक्कर आने लगेंगे पू. गुरुदेव ने उसकी भक्ति देख मुस्कुराकर आशीर्वाद देते हुये अपने कदम पुन: आगे बढ़ा लिये, फिर भी वह नहीं माना और पू. श्री के पीछे चल रहे महाराज माताजियों के समक्ष नींबू पानी के गिलास ले जाकर पूर्ववत् कहने लगा। जब किसी ने भी उसकी सेवा ग्रहण नहीं की तो वह हताश हो गया। तब साथ चल रहे एक श्रावक ने उसे समझाया कि ये जैन साधु दिन में एक ही बार विधिपूर्वक शुद्ध आहार लेते हैं इसलिये तुम्हारा नींबू पानी नहीं पियेंगे। यह सुनकर वह आश्चर्यचकित हो गया एवं बाद में उसने साथ चल रहे सभी श्रावकों को वह नींबू पानी पिलाया।

जैन साधकों की ऐसी कठोर तपस्या देख वह इतना प्रभावित हुआ कि कुछ दूर तक स्वयं भी बिना चप्पल के साथ चलने लगा। यह उसकी आन्तरिक श्रद्धा ही थी जो जैन साधुओं से अनभिज्ञ होने पर भी भक्ति से प्रेरित होकर सेवा हेतु आतुर हो गया।

पूज्य गुरुदेव की तप साधना का चमत्कार

श्रमणी आर्यिका विजिज्ञासाश्री माता जी

उड़ीसा में आई प्राकृतिक महाआपदा फौनी तूफान ने दिनांक १.५.२०१९ को पूरी नगर में प्रवेश कर तबाही मचाना प्रारंभ किया तो वेगशाली तूफान एवं मूसलाधार बारिश को देख जनमानस का घबराहट के कारण बी.पी. हाई होने लगा। इधर लोगों के जहाँ बी.पी.हाई हो रहे थे वहीं करूणामयी गुरुवर चिंतन कर रहे थे कि ओहो ऐसी परिस्थिति में उन झुग्गी झोपड़ी वालों एवं मूक पशु-पक्षियों का क्या हाल हो रहा होगा ऐसा सोचकर इस महा आपदा से जीवरक्षा एवं जगत शांति हेतु प.पू. गणाचार्य श्री ने तप-साधना को वृद्धिंगत करते हुये चतुर्विध संघ को निर्देशितकर संघ सहित जाप्यानुष्ठान प्रारंभ किया इतना ही नहीं बल्कि प.पू. गुरुदेव सहित अनेक साधकों ने उपवास भी किया।

फलत: वह महातूफान शनै: शैन बहुत कम होकर बंगाल की खाड़ी में जाकर समाप्त हो गया। तूफान समाप्त होने पर श्रीमान अजय जी जैन (कटक वाले) ने प.पू. गुरुदेव के समीप आकर दोनों चरण पकड़ लिये एवं बोले-गुरुदेव यह चमत्कार सिर्फ आपके अशीर्वाद के प्रभाव से ही संभव हुआ है कि जहाँ पिछली बार (सन-१९९२ में) आये इस महातूफान ने लाखों करोड़ों की जन-धन हानि की थी वहीं पिछली बार की अपेक्षा इस बार कुछ भी नुकसान नहीं हुआ और सबसे अधिक आश्चर्य एवं प्रसन्नता की बात तो यह है कि मेरी जिस दालमिल में मैने आपका पादप्रक्षालन किया था दालमिल में तनिक भी नुकसान नहीं हुआ। जबकि पास की मेरी दवाई की फैक्ट्री में Sicklone के कारण १५ लाख का एवं आसपास की अन्य फैक्ट्रियों में भी लाखों का नुकसान हुआ है।

उन्होंने यह भी बताया कि खण्डगिरि-उदयगिरि से विहार करते समय प.पू. गणाचार्य श्री का जहाँ-जहाँ पदार्पण हुआ वहाँ की स्थिति पूर्ववत् सामान्य होने से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों वहाँ कुछ हुआ ही न हो।

यह सब प.पू. गणाचार्य गुरुवर की तप-साधना एवं आत्मविशुद्धि का ही प्रभाव ही कि जहाँ भी आपके पावन चरण द्वय पड़ते हैं वहाँ के बड़े से बड़े उपद्रव सहज ही दूर हो जाया करते हैं।

प्राणायाम में उपयोगी बन्धत्रय

आर्यिका पुनीत चैतन्यमति माता जी

बन्ध का अर्थ ही है बाँधना रोकना ये बन्ध प्राणायाम में अत्यन्त सहायक है बिना बन्ध के प्राणायाम अधूरे है। योगासन प्राणायाम एवं बन्धों के द्वारा हमारे शरीर से जिस शक्ति का बहिर्गमन होता है उसे हम रोककर अन्तर्मखी करते है। क्रमश: बन्धों का वर्णन-

१. जालन्धर बन्ध - पदमासन या सिद्धासन में सीधे बैठकर श्वास को अन्दर भर लें। दोनों हाथ घुटनों पर टिके हुए हों। अब ठोड़ी को थोड़ा नीचे झुकाते हुए कण्ठकूप में लगाता जालन्धर बन्ध कहलाता है। दृष्टि से भ्रूमध्य में स्थिर करें। छाती आगे की ओर तनी हुई होगी। यह बन्ध कष्ठस्थान के नाड़ी जाल को बांधे।

लाभ- कण्ठ मधुर-सुरीला और आकर्षक होता है। गले के सभी रोगों में लाभ। थायरायड, टांन्सिल आदि रोगों में आभ्यसनीय है। विशुद्धि चक्र को जाग्रति करता है।

२. उड्डीपान बन्ध- खडे होकर दोनों हाथों को सहज भाव से दोनों घुटनों पर रखिए। श्वास बाहर निकालकर पेट को ढीला छोड़ें। जालन्धर बन्ध लगाते हुए छाती को थोड़ा ऊपर की ओर उठायें। पेट को कमर से लगा दें। यथाशक्ति करने के पश्चात् पुन: श्वास लेकर पूर्ववत् दोहरायें। प्रारम्भ में तीन बार करना धीरे-धीरे अभ्यास बढ़ाना चाहिये।

इसी प्रकार पदमासन या सिद्धासन में बैठकर भी इस बन्ध को लगाये।

लाभ- पेट सम्बन्धी समस्त रोग को दूर करता है। प्राणों को जाग्रत कर मणिपूर चक्र का शोधन करता है।

३. मूलबन्ध - सिद्धासन या पदमासन में बैठकर बाह्य या आभ्यन्तर कुम्भक करते हुए गुदाभाग एवं मुत्तेन्द्रिय को ऊपर की ओर आकर्षित करें। इस बन्ध में नाभि के नीचे वाला हिस्सा रिक्त जायेगा। यह बन्ध बाह्य कुम्भक के साथ करें।

विरागामृत

(१७.६.२०१९ बेलगछिया कलकत्ता)

- ❖ त्याग उतना करो जिसके लिये कोई व्यवस्था न बनानी पडे।
- ❖ जहाँ इच्छाओं का त्याग किया जाता है वही दीक्षा है।
- ❖ जिसकी इच्छाएँ वलवती होती है वह मोक्ष मार्ग पर नहीं चल सकता।
- ❖ सबसे ज्यादा इच्छाओं का परिग्रह ही भारी करता है।
- ❖ अभिलाषाओं को दर्शन घाती कहा है।
- ❖ पुण्य है तो सहज में सभी व्यवस्थाएँ बन जाती है।
- ❖ देवशास्त्र गुरु की आज्ञा को तोड़ना समक्यत्व का घात करना है।
- ❖ यदि सम्यक्दर्शन नहीं है तो सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र भी नहीं रहेगा।
- ❖ लौकिक अभिलाएँ मिथ्यात्व की ओर ले जाती है।
- ❖ विषयाशक्त व्यक्ति आशक्ति में सब कुछ भूल जाता है।
- ❖ संत का अपना चिन्तन अच्छा होना चाहिए चिन्तन करने वाले विवेकवान होते हैं।
- ❖ सच्चे भाव लिंगी संत अपना आत्म कल्याण कर लेते हैं।

कहानी लगे सुहानी

क्षुल्लिका विज्ञप्तिश्री माता जी

आकर्णिताऽपि महिंतोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽपि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जन बान्धवा दुःख पात्रं,
पस्भाटिक्रयाः प्रति पुलान्त न भाव शून्याः।।

गाथा नं. ३८ श्री कुमुदंचंदाचार्य विरचित कल्याणे भंदीर स्तोत्र- उदाहरण से....एक मुनिराज जंगल में उष्ण शीला पर ध्यान कर रहे थे। गर्मी के दिन थे। एक आदमी वही से निकलता है। मुनिराज को देखते है और सोचते हैं कि ये कोई महान संत हैं। ऐसी भीषण गर्मी में जंगल में उष्णता पर तप कर रहे है। मैं ऐसा कठिन तप तो नहीं कर सकता हूँ परन्तु इस महान तपस्वी की कुछ सेवा या वैयावृत्ति तो कर सकता हूँ। उसका घी बेचने का धंधा था। उनके पास मक्खन भरा घडा था। उन्होंने घडा में से मक्खन निकाल कर मुनि के शरीर पर लगा दिया। और सोचता था कि मक्खन से साधु को थोड़ी ठण्डक मिल जायेगी। ऐसा सोचकर वहाँ से चला जाता है। उसी समय दोपहर के दो-तीन बजे का समय था। गर्मी की सारा शरीर पर लगा हुआ मक्खन पीघलने लगा। और मक्खन ने घी का स्वरूप धारण कर लीया। घी की सुगंध से चींटियों आने लगी और मुनिराज के शरीर पर चढ़कर काटने लगी।

अब देखो क्या होता है ? एक तुफानी लडका वहां से गुजरता है। हाथ में गन्ना की लकडी लेकर चलता है। गन्ने के टुकड़ा तो खा रहे थे। और मस्ती में छिलका मुनिराज के शरीर पर डालता जा रहा है। गन्ने के छीलके से कुछ चींटियों इधर-उधर होने लगती है और मुनिराज के शरीर पर से सारी चीटियों उतरने लगी है।

जब मुनिराज का ध्यान पूरा होता है तब उस लड़के को भी आशीर्वाद देते है। क्यों ? सोचो... ?

जब पहला व्यक्ति ने मुनिराज के शरीर पर मक्खन लगाया था तब उनका भाव कितना सुंदर था। भाव सुन्दर था पर क्रिया गलत थी। जब दूसरा लड़का मुनिराज को शरीर पर गन्ने का छिलका फेंकता था तब क्रिया सही थी पर उसका भाव शुद्ध नहीं था। परंतु मुनिराज को केवलज्ञान हो गया।

प्रश्न- क्या कारण था ? उत्तर- जब भाव अच्छा था पर क्रिया गलत थी- उसी कारण मुनिराज के शरीर पर चीटियों ने उपसर्ग किया यह उपसर्ग को मुनिराज ने समता भाव से सहज किया और जब तुफानी लडके ने गन्ने के छिलके मुनिराज के शरीर पर फेंके थे तब क्रिया तो शुद्ध थी पर भाव शुद्ध नहीं था। तब मुनिराज को केवलज्ञान की प्राप्ति हो गया। इसी से मुनिराज ने कहा कि दोनों व्यक्ति सही है। क्योंकि पहले व्यक्ति के द्वारा यदि मेरे पर उपसर्ग नहीं आता तो सहन करने की शक्ति और केवलज्ञान की प्राप्ति मुझे कहाँ से होगी ? यानी भाव भी अच्छा हो। और क्रिया भी अच्छी सही हो तो अवश्य केवलज्ञानी मुक्ति को पा सकते है।

सारांश- बिना भाव कोई क्रिया नहीं होती। बिना क्रिया कोई भाव नहीं होता।।

भाव और क्रिया ये धर्मरथ के दो पैये है देखिये ! मात्र भाव-भाव शुद्ध है ऐसा कहने से कोई कार्य सिद्ध नहीं होता, और मात्र क्रिया-क्रिया करने से भी कोई कार्य सिद्ध नहीं होता। यानी भाव और क्रिया दोनों एक दूसरे के पूरक है ये दोनों में तादात्मय संबंध है। भाव सही तो क्रिया सही।

कल्याण मंदिर स्तोत्र में भी बताया गया है कि भाव के बिना की गयी सभी क्रिया शून्य के समान है और भाव से की गई सभी क्रिया अंक के समान है। क्योंकि शून्य को आगे कोई भी अंक लगाने से कोई कीमत नहीं होती परन्तु अंक के आगे कितने भी शून्य लगाते जाओ। कीमत इतनी ही बढ़ती जायेगी। जैसे- १ के पीछे ० शून्य लगाओ तो १०, १० के आगे अंक शून्य लगाओ तो १००, १०००, १०,०००, लाख, दस लाख, दस करोड़ आदि बन जाते है।

स्वप्न में जागी करूणा

परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी गुरुदेव ने अपना स्वप्न सुनाया-

स्वप्न ता. १.५.२०१९ हावड़ा (कलकत्ता)

चतुर्विध संघ का विहार चल रहा है रास्ते में रोड़ पर एक गरीब माँ और उसकी बच्ची दीन हीन दशा में बैठी है। माँ ने किसी कार्य हेतु बच्ची से उठने के लिए कहा- लेकिन बच्ची उठ न सकी माँ ने पुन: कहा तो बच्ची बोली माँ मेरी स्थिति उठने लायक नहीं है। मेरे पास पहनने को पूर्ण वस्त्र नहीं है जो कपड़े मैं पहिने हूँ वे भी फटे हुए हैं सिलने के लिए सुई धागा भी नहीं है मैं कैसे उठूँ।

पूज्य आचार्य भगवन् उनकी दयनीय दशा देख करूणा से भर गये वे सोचने लगे ये लोग कितने गरीब हैं इनके पास पहिनने को कपड़े, खाने को भोजन भी नहीं है। लोग अनावश्यक घूमने-घामने में पैसों का दुरोपयोग करते हैं सही मायने में उन्हें ऐसे लोगों की सेवा करना चाहिए। मेरा वंश चले तो सभी को सुखी कर दूँ।

७.६.२०१९ हावड़ा (वंगवाशी)

एक स्थान पर बहुत सारी गाय और उनके छोटे-छोटे बछड़े हैं लोग उन्हें बड़े-बड़े बवरा हाथ में रखकर खिला रहे हैं हम भी वहीं बैठे हैं गाय के वे छोटे-छोटेक बछड़े आकर हमारे हाथ चाटने लगे।

दूसरा स्वप्न- जहाँ पर हम बैठे हैं वही एक शेर आ गया पास में बैठे श्रावक कहने लगे महाराज देखो शेर आ रहा हमने उस ओर देखा शेर भी आकर वहाँ खड़ा हो गया। कुछ लोग शेर की ओर से हाथ लगाकर बोले महाराज आप निकल जाओ तो हमने कहा- शेर तो सामने बैठा है निकल कर कहाँ जायें अब तो यहीं बैठेंगे हम लोग वहीं बैठे रहे शेर भी बैठा रहा फिर निकल कर चला गया।

तीसरा स्वप्न- कोई बहुत बड़ा पंचकल्याणक आदि कार्यक्रम होना है अपना पूरा संघ भी वहाँ है। बहुत सारे हाथी कार्यक्रम के लिए आये हैं लेकिन अभी कार्यक्रम शुरु नहीं हुआ है इसलिए वे सभी आराम कर रहे हैं उनमें बहुत सारे तो छोटे-छोटे बच्चे जैसे हैं वे भी आराम से बैठे हैं।

गुरु ने दी माला (स्वप्न)

२५.४.२०१९ सिद्धक्षेत्र खण्डगिरि-

स्वप्न- आज स्वप्न में देखा कि संपूर्ण संघ खण्डगिरि और उदयगिरि की गुफाओं में बैठकर ध्यान कर रहा है।

६.५.२०१९ आचार्य श्री- आज स्वप्न में परम पूज्य गुरुदेव विमलसागर जी महाराज दिखे हम उनके पास बैठे हैं। हमें माला चाहिए तो हम कह रहे हैं हमारी माला कहाँ है। इतने में आचार्य श्री पूछने लगे, तुम्हें माला चाहिए क्या? हम दे दें। पहले तो हमने कहा- नहीं-नहीं, हमारी माला है कहीं रखी होगी। आचार्य श्री बोले- हमारी फिरी हुई चाहिए, तो हमने कहा- हाँ आप अपनी फिरी हुई दे दो तो बहुत अच्छा है। पूज्य आचार्य श्री ने बहुत सारी मालाओं में से एक माला निकालकर हमे दी।

प.पू. आचार्य रत्न, चर्या चूड़ामणी राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के परिचय फोटो एवं अन्य जानकारी हेतु-

1. **www.ganacharyaviragsagar.com**
2. **Facebook : viragvani**
3. **Email : viragsagarji@gmail.com**
4. **youtube : Ganacharya Viragsagarji**
5. **सं. सूत्र what'sapp no 9009462216**

दीक्षा का लक्ष्य

दीक्षा प्राप्ति यदि सौभाग्य है तो उसका अन्तिम क्षणों तक लक्ष्य सहित पालन करना, सौभाग्य से बढ़कर है। दीक्षा के उपरांत भी लक्ष्य प्रतिक्षण बना रहे तो दीक्षा की सार्थकता है। हाथ में पिच्छी कमण्डल लेने या भेष बदलने या परिवार कुटुम्ब को छोड़ देने मात्र का नाम दीक्षा नहीं है। दीक्षा जीवन का शुभारम्भ नहीं है बल्कि विशाल संसार के त्याग और वैराग्य धारण का मध्य बिन्दु है। अत: दीक्षा ग्रहण के अन्तिम लक्ष्य को पाने हेतु संसार के त्याग के साथ-साथ अनिवार्य हैं अंतरंग में सच्चे ज्ञान और वैराग्य के उद्भावन का। जिसके जीवन सम्यक्ज्ञान और वैराग्य का जन्म हो जाता है वह मात्र साधु नहीं बनता अपितु साधु वेश के साथ-साथ साधुता का समावेश भी उसके जीवन में हो जाता है। वह साधक जिस अवस्था में है तदनुरुप परिणामों को भी प्राप्त कर लेता है और वे पवित्र और विशुद्ध परिणाम ही उसे दीक्षा के समीचीन लक्ष्य मुक्ति प्राप्ति अथवा कर्म क्षय को प्रदान करते हैं।

सामायोचित शिक्षायें से साभार

निर्वाणपद

आ. श्री १०८ विशुद्धसागर जी

वे ही समझे
धर्म के मर्म को,
जिन्होंने किया प्राप्त
सम्यक्त्व पूर्वक
सम्यग्ज्ञान को
फिर
धारण कर
निर्दोष आचरण
पायेंगे वे
भव्य पद निर्वाण।

हँसते रहो हँसाने के लिए

1. **स्टेज मास्टर**- मैं तुम्हें १० दिन में स्टेज बनाकर दूँगा।
   राजा - पर मेरी शादी तो चार दिन बाद है।
   स्टेज मास्टर - छ: दिन शादी की प्रक्ट्रिस कर लीजिए।
2. **सोना** - मुझे चांदी की पायल चाहिए।
   रोना- पैसे हैं तो मिल जाएगी।
   सोना - पैसे का ही तो रोना है।
   रोना - रोना नहीं, सोचो पायल से बढ़कर पैर हैं।
3. **मच्छर** - उठो सुबह हो गयी।
   चींटी - सर्दी है, ६ बजे जगाना।
   मच्छर - मैं नाईट ड्यूटी करके अब सोने जा रहा हूँ तुम खुद उठना।

शिखा जैन

आध्यात्मिक शंका-समाधान

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

वर्तमान भौतिक वादी युग में संसारी प्राणी भोगों की अभिलाषाओं की पूर्ति के लिये दिनरात पैसा कमाने में लगा है। जैन कुल में जन्म लेकर भी छः आवश्यक कर्त्तव्यों को भूलता जा रहा है। संस्कारित परिवारों में देवदर्शन पूजन तो फिर भी व्यक्ति करता है पर स्वाध्याय के लिये उसके पास समय नहीं और जो स्वाध्याय भी करते हैं वे आर्ष परम्परा के आचार्य प्रणीत ग्रन्थों का स्वाध्याय या तो करते ही नहीं या करते हैं तो उसके सही अर्थ भावार्थ को न समझ पाने के कारण ये उन लोगों द्वारा कहे जाते हैं जो अपनी पंथ, आम्नाय विचारधारा या ख्याति लाभ प्रशंसा का कारण कुछ का कुछ बताकर भ्रमित कर देते हैं।

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने मोक्षमार्ग में आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त नहीं किया बल्कि वर्तमान समय के सबसे बड़े चतुर्विध संघ के नायक हैं। ज्ञान की असीम गहराईयों में डुबकी लगाकर सर्वोदया, रत्नत्रय वर्धिनी, श्रमण प्रबोधनी, श्रमण सम्बोधनी आदि संस्कृत टीकाओं के अलावा १५० से भी अधिक आलेखों द्वारा जन मानस के कल्याण के लिये जिनागम को दुर्लभ रत्न प्रदान किये हैं। चारों अनुयोगों को समझाने हेतु जन सामान्य की शंकाओं के समाधान हेतु क्रमिक प्रस्तुति-

शंका- तो फिर द्रव्य श्रुतज्ञान को श्रुतज्ञान क्यों कहा ?

समाधान- द्रव्य श्रुतज्ञान भावश्रुतज्ञान का कारण है देखिये

(१) गो.जी.प्र. ३४८/७४४/१५ पर

सच्छूवण समुत्पन्न श्रुतज्ञान पर्याय रूपं भावश्रुतं।

अर्थ- द्रव्यश्रुत के सुनने से उत्पन्न श्रुतज्ञान पर्याय रूप भावश्रुतज्ञान है।

(२) और भी देखिये (न.घ.प्रा.क्षे.गा.२८७)

दव्व सुयादो भावं तत्तो भेयं हवेइ संवेदं।

तत्तो संवित्ती खलु केवल णाणं हवे तत्तो।।

अर्थ- द्रव्य श्रुत के अभ्यास से भावश्रुत होता है और उससे बाह्याभ्यंतर संवेदन होता है उस संवेदन से शुद्धात्मा की संविति होती है तथा शुद्धात्म संवित्ति से केवलज्ञान होता है।

शंका- तो द्रव्य रूप व्यवहार श्रुतज्ञान कितने प्रकार का है।

समाधान- द्रव्य रूप व्यवहार श्रुतज्ञान दो प्रकार का है देखिए- (द्र.सं.टी.गा. ४२/१४४/११)

सप्त तत्त्व, नव पदार्थेषुमध्ये निश्चय नयेन स्वकीय शुद्धात्म द्रव्यं...।

उपादेयः शेषं च हेयमिति संक्षेपेण हेयोपादेय भेदेन द्विधा व्यवहारज्ञानमिति।

अर्थ- सात सत्त्व, नव पदार्थो में निश्चत नय से अपना शुद्धात्म द्रव्य ही उपादेय है इसके सिवाय शुद्ध अशुद्ध पर जीव अजीव आदि सभी हेय हैं। इस प्रकार संक्षेप से हेय तथा उपादेय भेदों से व्यवहार ज्ञान दो प्रकार का है।

शंका - व्यवहार रुप श्रुतज्ञान क्रूा विकल्प रुप होता है तथा उससे किस साध्य की सिद्धि होती है ?

समाधान- देखिये (पं.का.ता.वृ.गा.४३/८६)

विकल्प रूप व्यवहार ज्ञानेन साध्यम निश्चय ज्ञानम्।

अर्थ- विकल्प रूप द्रव्य या व्यवहार श्रुतज्ञान है इससे साध्य रूप निश्चय रूप भावश्रुतज्ञान होता है।

शंका- भाव श्रुतज्ञान क्या अभेद रत्नत्रयात्मक होता है और भादेय है तो फिर व्यवहार श्रुतज्ञान क्या है ?

समाधान- देखिये (पं.का.ता.वृ.गा. ४३ पृ. ८६)

अभेदरत्नत्रयात्मकं यतभावश्रुतं तदेवोपादेयभूतपामात्वतत्व साधकरणान्निश्चयेनोपादेगं तत्साधकं बहिरंग सु

व्यवहारेणति तात्पर्यम्।

अर्थ- अभेदरत्नत्रयात्मक जो भावश्रुतज्ञान है वही उपादेय है और उसका साधक महिरंग श्रुतज्ञान व्यवहार से उपादेय है ऐसा तात्पर्य है।

शंका- तो व्यवहार द्रव्य श्रुतज्ञान भी उपादेय है?

समाधान- हाँ, निश्चय के साथक रूप बहिरंग द्रव्य श्रुतज्ञान भी व्यवहार नय से उपादेय है।

शंका- व्यवहार रुप द्रव्य या बहिरंग श्रुतज्ञान कब तक आदेय है।

समाधान- व्यवहार रुप द्रव्य या बहिरंग श्रुतज्ञान तभी तक उपादेय है जब तक वीतराग चारित्र के अविनाभावी निश्चय या अंतरंग भावश्रुतज्ञान प्राप्त नहीं हो जाता है।

शंका- इसी का नाम क्या तत्त्वोपलब्धि है।

समाधान- हाँ, निश्चय वीतराग सम्यग्दर्शन की उपलब्धि निज तत्वोपलब्धि के बिना नहीं होती।

देखिये, (र.सा.गा.८६) में कहा भी है कि

णियतच्चुवलद्धि विणा सम्मत्तुवलद्धि णत्थि णियमेण।

सम्मत्तुवलद्धि विणा णिव्वाणं णत्थि णियमेण।।

अर्थ- निज तत्वोपलब्धि के बिना (निश्चय) सम्यक्त्व को उपलब्धि नियम से नहीं होती और (निश्चय) सम्यक्त्व की उपलब्धि के बिना निर्वाण नहीं होता।

शंका- आपने यह निश्चय सम्यक्त्व ऐसा अर्थ कैसे किया?

समाधान- अगर ऐसा नहीं करते तो मिथ्यादृष्टि को भी आरभोपलब्धि का प्रसंग आ जाता।

अध्यात्मिक शंका-समाधान कृति से साभार

सर्वोदया/ रत्नत्रय वर्धिनी टीका

प.पू. आचार्य कुन्दकुन्द देव की महान कृतियाँ बारसाणुपेक्खा एवं रयणसार पर प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा अत्यन्त ही सरल एवं सहज संस्कृत भाषा में हिन्दी अनुवाद सहित अनुपम टीका जो आगम, अध्यात्म एवं सिद्धान्त की प्रमाणिकता से ओत प्रोत, क्रमश: शोध पूर्ण ग्रन्थ, ११०० पृष्ठीय सर्वोदया एवं १३०० पृष्ठीय रत्नत्रय वर्धिनी- दो दो भागों में भारतीय ज्ञान पीठ से प्रकाशित हो चुकी हैं। मंदिर जी, साधु-संघों तथा विद्वानों ने स्वाध्यायार्थ स्वपर ज्ञान वृद्धि हेतु सर्वोदया टीका ४९०/-रूपये प्रत्येक भाग एवं रत्नत्रय वर्धिनी टीका ६५०/- प्रत्येक भाग के मूल्य पर विक्रय हेतु उपलब्ध है-

प्राप्ति स्थान- १. **भारतीय ज्ञान पीठ (विक्रय केन्द्र)**
४४०५/५ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली पिन को. ११०००३
सं.सूत्र श्री संजय दुवे मो. ८५०६८६२९५४ फोन नं. ९१-०११-२३२४१६१९

२. **श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ**
चैत्यालय मंदिर बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
सं.सूत्र पं. वीरेन्द्र जैन, भिण्ड मो.९७५४८०३२२०

३. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र विरागोदय धर्मधाम,**
पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.)
सं. सूत्र कपिल सिंघई पथरिया, मो. ९८९३७५३२२३

नेत्र रोग से निजात पायें

संकलन- श्रमणी आर्यिका विवक्षाश्री माता जी

आंखे शरीर का महत्वपूर्ण व कोमल अंग है अत: इसकी विशेष साल सम्हाल करनी चाहिए। कई बार रात को अधिक जागने, दिन में सोने, आंखों में धूल-मिट्टी या धुआं घुसने, गरम धूप में पानी से मुंह धोने, बारीक अक्षरों को पढ़ने, बारीक काम करने, दूर की वस्तुओं को देर तक देखते रहने या पौष्टिक भोजन के अभाव में अनेक नेत्र रोग हो जाते हैं।

इसी प्रकार धूप, ठंडी हवा, समय पर न सोने, वमनादि के वेग को रोकने, ज्यादा देर तक रोने, सिर में चोट लगने, आंसुओं के वेग को रोकने, प्रकृति के विरुद्ध भोजन करने या धूप में तपकर अचानक ठंडे पानी के अन्दर जाने से भी अनेक प्रकार के नेत्र रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इन सभी प्रकार के आंखों के रोगों के लिए फल बेहद उपयोगी है।

आंवला- १. आँख दुखने पर आंवला, हर्र व बहेड़ा (त्रिफला) का चूर्ण को रात को मिट्टी के बर्तन में भिगोकर प्रात: छानकर इस पानी से आंख धोने से आंखों के समस्त दर्द में लाभ मिलता है। सूजन भी आंखों की समाप्त होती हैं।

२. आंवला का रस पानी सुबह-शाम पीने से नेत्र विकारों में लाभ होता है।

३. जब आंखों में पानी आने की बीमारी हो जाये तो आंवले का मुरब्बा खाने से लाभ मिलता है।

४. आंवले की अधिकता वाले त्रिफला चूर्ण का अंजन बनाकर आंखों पर लगाने से पानी आना बंद हो जाता है।

५. आंवले की लुगदी पलको पर मरहम की तरह लगाये सूजन में राहत मिलता है।

६. रतौंधी होने की स्थिति में प्रतिदिन एक आंवले का सेवन करें।

७. गर्मियों के मौसम में चक्कर से छुटकारा पाने हेतु आंवले का शर्बत पीयें।

बेलपत्र - १. बेल की पत्तियों का रस छानकर १-२ बूंद आंखों में डालने से आंख दुखना बंद कर देता है, आंखों की चुभन, पीड़ा व शूल को ठीक कर देता है।

२. बेलपत्र के रस पीने से तथा बेलपत्र के रस मिश्रित पानी से पुतलियाँ घोते रहने से कुछ दिनों में रतौंधी में चमत्कारी असर होता है।

३. बेल की सात कोंपलें व ७ दाने काली मिर्च के पीसकर २ चम्मच पिसी हुई शक्कर में मिलाकर सुबह नास्ते के पहले चटनी की तरह खायें। यह प्रयोग सर्दी के मौसम में करें। गर्मी में चटनी का शरबत पीए। अगर वायु व कफ की शिकायत हो तो एक चम्मच चासनी भी मिला ले। यह प्रयोग से रतौंधी में काफी लाभ मिलता है।

नारियल- १. २५ग्राम सूखी गिरी व ६० ग्राम शक्कर मिलाकर प्रतिदिन सेवन से आंख दर्द नहीं होता है।

२. मोतीयाबिंद होने पर नियमित कच्चे नारियल के सेवन से लाभ होता है।

बादाम- शाम का भिगा बादाम सुबह पीसकर खायें उपर से दूध पीलें। दर्द ठीक होगा। आंख से पानी आना बंद होता है। शाम का भिगा बदाम प्रात: पीसकर पानी मिलकार पीयें मोतियाबिंद में राहत मिलेगी।

आम- आम के प्रयोग से आंखों का दर्द समाप्त होता है। इससे शरीर में विटामिन ए की कमी पूरी होगी और रतौंधी में भी आराम मिलता है।

अनार- अनार के पत्ते पीसकर टिकिया बना लें, रात को सोते समय आंख पर बांधने से आंख दर्द में लाभ होता है।

संतरा- १. संतरे का रस एक गिलास प्रतिदिन पीने से आंखों से पानी आना जड़ से दूर हो जाता है।

२. २ मीठे संतरे का रस निकालें, उसमें एक चौथाई छोटी चम्मच काली मिर्च का पाउडर मिलाकर पीयें। १ माह तक लगातार सेवन से दृष्टि पुन: सबल हो जाती है।

अमरुद- आग में सेक कर खाने से आंखों से पानी आना बंद हो जाता है।

अखरोट- सूखे मेवा के रूप में अखरोट का प्रयोग करते रहने से आंखों से पानी आना बन्द हो जाता है।

अंगूर- १. आंखों से पानी बहने से दुखती आंखों में १-२ बूँद अंगूर के रस को डालने से आंखों का दर्द कम हो जाता है तथा पानी बहना भी बंद हो जाता है।

२. अंगूर के रस को पकाकर गाड़ा बना लें। ठंडा होने पर इसे शीशी में भर लें। आंखों में काजल की तरह रात को लगाकर सो जाएँ। आंखों की खुजली मिट जायेगी।

सेव- प्रतिदिन १ ग्लास सेव का जूस पीने से मोतीयाबिंद में लाभ मिलता हैं एवं अन्य आंखों के विकार दूर होते हैं।

२. रतौंधी में प्रातः १ सेव प्रतिदिन सेवन करें।

नींबू- अक्सर चक्कर आने पर १ कप गर्म पानी में आधा चम्मच नींबू रस पीने से लाभ होता है।

मुनक्का- घी में सीका मुनक्का में सेंधा नमक डालकर खायें चक्कर आना बंद हो जायेगा।

कितनी कविता लिखूँ तुम्हारी

कितनी कविता लिखूं तुम्हारी, तुम ही मेरे गुरुवर हो,
तुम्ही जगाते मेरे जग को, तुम ही भेष दिगम्बर हो।।
जीवन सफल बनाया तुमने,
रत्नत्रय को धारण कर।
धर्म सुधा बरसाया तुमने,
आत्म ज्ञान को ही पाकर।।
धन्य हो गया तुम्हारा जीवन, तुम ही ज्ञान सुधाकर हो।
कितनी कविता लिखूं तुम्हारी, तुम ही मेरे गुरुवर हो।।
जन्म लिया है नगर पथरिया,
औ धन्य हुए है माता पिता।
वैराग्य लिया है माता पिता ने
ज्ञान की ज्योति जलाई अतः।।
प्रभु की गाथा गाई तुमने, तुम ही तो समता घर हो।
कितनी कविता लिखूं तुम्हारी, तुम ही मेरे गुरुवर हो।।
पढ़ने गये है चरण तुम्हारे,
धर्म का मेला लगा वहां।
धर्म ध्वजा फहराई तुमने,
समता पाई औ, वहां वहाँ।।
धर्म की महिमा फलाई तुमने, तुम ही ज्ञान दिवाकर हो।
कितनी कविता लिखूं तुम्हारी, तुम ही मेरे गुरुवर हो।।
अब आये चरण शरण तुमरे,
मेरा अब कल्याण करो।
अंत समय आया है मेरा,
अब हम पर ध्यान करो।।
जग में जबतक 'करुण' रहेगा, कब पाये हम शिवधर हो।
कितनी कविता लिखूं तुम्हारी, तुम ही मेरे गुरुवर हो।।

रच. कांति कुमार जैन 'करुण' खिमलासा

महत्वपूर्ण जानकारी

परम पूज्य गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर ससंघ कहाँ विराजमान हैं, जानने के लिए Google अथवा किसी भी इंटरनेट Browser पर जाकर टाईप करें।

Viragsagar.trackerbox.co.in जो Location दिखाएँ उसे बड़ा करके उसके विषय में तथा आस-पास की Location के विषय में जाना जा सकता है।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

दीक्षा दिवस

श्रमणी आर्यिका- बोधश्री, वित्तश्री, युक्तश्री, जेताश्री, श्वासश्री माता जी

गुरु विराग की परम कृपा से, जीवन को महकाया है
पिच्छी और कमण्डल पाये, दीक्षा दिवस मनाया है।।

खुशियाँ इतनी वरसा दी, गुरुवर ने इस सागर में।
ग्यारह दीक्षाएँ जब दी थी, पावन कर से सागर में।।

सागर की हम बूँद रहें और, सागर से न दूर हों।
गुरु आज्ञा अनुशासन में, शिष्याएँ भरपूर हों।।

गुरु उपकार दिवस

मोक्ष मार्ग पर हमें बढ़ाया, समता का पाथेय दिया।
चिंतन का संवल दे पल-पल, शुद्धातम् का ध्येय दिया।।

शून्य को अंक मिला हो जैसे, बूँद को जैसे सागर हो।
यासे को अमृत की सरिता, गुरुवर विराग सागर हो।।

नाथ कलाएँ सारी तुममें, एक हमें गुरुवर देना।
गुरु भक्ति जो वसी आपमें, वस उससे ही भर देना।।

पेसिंल कॉपी कुछ न माँगे, गुरुवर आशीर्वाद दो।
गुरु उपकार दिवस पर हमको, जनम-जनम का साथ दो।।

गुरु पूर्णिमा पर प.पू. गुरुदेव को समर्पित

गुरुवर आप देते रहना
हम लेते रहेंगे
आप देते-देते नहीं थकेंगे
हम लेते-लेते नहीं थकेंगे
क्योंकि आप गुरु हैं, पूर्ण हैं
हम शिष्य हैं, अपूर्ण हैं
गुरु पूर्णिमा पूर्ण होने का पर्व है
आपको पाकर हम शिष्यों को गर्व है
आप सिखाना हम सीखेंगे
आप जो कहेंगे वही हम करेंगे
१०० प्रतिशत सफलता आपका आशीर्वाद देगा
हमारा तो वस लघु प्रयास रहेगा
गुरु पूर्णिमा पर आपको और क्या दे सकेंगे
आपके थे, आपके है, आपके रहेंगे।

श्रमणी आर्यिका वियुक्तश्री माताजी

दीक्षा दिवस पर.... गुरु स्तुति

श्रमणी आर्यिका विसंयोजनाश्री माता जी

अध्यात्म के उन्नत शिखर, रत्नत्रय की मूर्ति तुम।
अर्हन्त संप्रतियुग के हो, हो विरागता के रूप तुम।।

है परम शांत मुद्रा तेरी, सम्यक्त्व को प्रगटित करे,
हे नाथ! तब वाणी मेरे, अज्ञान को विघटित करे-२।
चारित्र चर्या में दिखे, बोधि की अनुपम खान तुम,
अर्हन्त संप्रतियुग के हो, हो विरागता के रूप तुम।।

रागी नहीं, द्वेषी नहीं, समभाव से भरपूर हो,
हे वीतरागी! महाश्रमण, कलिकाल के सर्वज्ञ हो-२।
रहें लीन अपने में सदा, फिर भी बसे हर दिल में तुम,
अर्हन्त संप्रतियुग के हो, हो विरागता के रूप तुम।।

तप की तपन तब रूप के, सौंदर्य को विकसित करे,
प्रभुनाम की माला सदा, परिणाम को निर्मल करें-२
सुर नर चरण वंदन करें, तप त्याग की प्रतिमूर्ति तुम,
अर्हन्त संप्रतियुग के हो, हो विरागता के रूप तुम।।

उपसर्ग परिषह जीतते, प्रभुपार्श्व सम दृढ़ता धरें,
महावीर की करुणा दया, जीवंत कलियुग में करें-२
तज बैर हम धारें क्षमा, ऐसा वरो आशीष तुम
अर्हन्त संप्रतियुग के हो, हो विरागता के रूप तुम।।

न्याय तर्क में हो समन्तभद्र, शास्त्रार्थ में अकलंक हो,
रचना में रस जिनसेन सा, टीका में गुरु वीरसेन हो-२
अध्यात्म कुन्दकुन्द सा गहन, सिद्धान्त में धरसेन तुम,
अर्हन्त संप्रतियुग के हो, हो विरागता के रूप तुम।।

तप-त्याग आदिसिन्धु सम, तव बोध महावीरकीर्ति सा,
वात्सल्य में हो विमल गुरु, गाम्भीर सन्मति सिन्धु सा-२
संपूर्ण गुणमणि से सजे, श्री विराग गुरु मम तीर्थ तुम
अर्हन्त संप्रतियुग के हो, हो विरागता के रूप तुम।।

पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में उदयपुर ४.७.१० को दीक्षित समस्त शिष्यों का कोटिश: नमोस्तु-३।

विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा हैं

पं. वीरेन्द्र जैन,(वीरू)

मोक्ष पथिक के पथ में चलकर काम क्रोध का शमन करूँ,
मूर्त रूप परिलक्षित होता जब गुरुवर का मनन करूँ।
सौम्यछवि दर्शन करने का भाव जगत में न्यारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

संस्कारों को उद्घाटित कर तुमने निज को पहचाना,
जिनका है इक मात्र इरादा शिवरमणी में रम जाना।
अब जग छूटे गुरु न छूटे गुरु मोक्ष का द्वारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

कामवासना के घेरे ने मुझको आकर घेरा है,
इसलिए अब तक न जाना इस जग में क्या मेरा है।
बांह पकड़ के नहीं छुड़ाना इतना ही कहना हमारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

क्या परिभाषित करूँ मैं तुमको यह सामर्थ्य नहीं पाता,
दिनकर को भी दीप दिखाना क्या जग में शोभा पाता।
तुमने सहज शांति भावों से दुर्जन को भी सुधारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

गुरुवर का जब नूर बरसता यह मन सावन हो जाता,
इनकी दया दृष्टि पाकर पतझड़ भी सावन हो जाता।
इनके आने से सबके मन चढ़ा भक्ति का पारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

सातसुरों का सदगम साधा ध्यान हृदय में लाने को,
मैं भी भक्तिनीर में डूबा तुम जैसा बन जाने को।
धन्य हूँ पाकर ऐसे गुरु जिसने किस्मत को संवारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

ज्ञानसुधा का पान कराते अपने कर में करुणा धार,
नहीं है भेदभाव इनमें कुछ वीतरागता छवि निहार।
इस आलौकिक छवि निरखने रतिकर ने डेरा डारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

करूँ प्रशंसा क्या गुरुवर की शब्दों का भण्डार नहीं,
जिनकी श्रुति सुरगण करते उनकी महिमा का पार नहीं।
उन सुरगण से बढ़कर हम जिन पर अधिकार तुम्हारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ का ४०वाँ पावन वर्षायोग-२०१९

सृष्टि के महान संत युग प्रमुख श्रमणाचार्य, श्रमण संस्कृति उन्नायक, साहित्य महोदधि, अहिंसा, व्यसन मुक्ति शाकाहार, बेटी बचाओ एवं स्वच्छता अभियान का देश १५ राज्यों में शंखनाद करने वाले अध्यात्म संत प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ का भव्य मंगल अभूतपूर्व ४०वाँ वर्षायोग बंगाल प्रान्त की राजधानी कलकत्ता के इतिहास में प्रथमबार महान पुण्योदय से पू.मुनि श्री सुपार्श्वनाथ सागर जी महाराज ससंघ सहित ५५ पिच्छी के विशाल चतुर्विध संघ की त्रिवेणी संगम के साथ हो रहा है। प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के प्रभावी शिष्यों व प्रशिष्यों के देश के १५ प्रान्तों पू. गणाचार्य श्री सहित ६१ चतुर्मास हो रहे हैं। प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के मूल संघ एवं सघों का वर्षायोग २०१९ निम्न प्रकार है-

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ का ४०वाँ पावन वर्षायोग २०१९ मूलसंघ

क्र	मूल संघ प्रमुख	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
१.	प.पू. राष्ट्रसंत गणा. १०८ श्री विरागसागर जी महामुनिराज	प.पू. आचार्य श्री विमलसागरजी महामुनिराज	श्री दिगम्बर जैन मंदिर बेलगछिया उपवन मंदिर कलकत्ता
२.	श्रमण श्री विहितसागर जी मुनिराज	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३.	श्रमण श्री विश्वलोचनसागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४.	श्रमण श्री विवर्धन सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
५.	श्रमण श्री विश्वविद्सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
६.	श्रमण श्री विदाम्बरसागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
७.	श्रमण श्री विश्वमित्रसागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
८.	श्रमण श्री विधेयसागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
९.	श्रमण श्री विश्वाक्षरसागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१०.	श्रमण श्री विशौर्य सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
११.	श्रमण श्री विश्वनायक सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१२.	श्रमण श्री विकौशल सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१३.	श्रमण श्री विनव्यन्धर सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१४.	श्रमण श्री विश्वदक्ष सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१५.	श्रमण श्री विश्वभानु सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१६.	श्रमण श्री विश्वहित सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१७.	श्रमण श्री विश्वधीर सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१८.	श्रमण श्री विश्वभद्र सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१९.	श्रमण श्री विनिवेष सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२०.	श्रमण श्री विश्वानन सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	

क्र	मूल संघ प्रमुख	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
२१.	श्रमण श्री विश्वानुत्तर सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२२.	श्रमणी आर्यिका विशिष्टश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२३.	श्रमणी आर्यिका विजेताश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२४.	श्रमणी आर्यिका विश्वासश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२५.	श्रमणी आर्यिका विरम्याश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२६.	श्रमणी आर्यिका विप्राश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२७.	श्रमणी आर्यिका वियोजनाश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२८.	श्रमणी आर्यिका विसंयोजनाश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
२९.	श्रमणी आर्यिका विरक्षणाश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३०.	श्रमणी आर्यिका विदितश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३१.	श्रमणी आर्यिका विदिताश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३२.	श्रमणी आर्यिका विभक्तश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३३.	श्रमणी आर्यिका विसुव्रताश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३४.	श्रमणी आर्यिका विजितश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३५.	श्रमणी आर्यिका विकुन्द्रनश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३६.	श्रमणी आर्यिका विजिज्ञासाश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३७.	ऐलक श्री विनियोग सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३८.	क्षुल्लक श्री विश्वभूषण सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
३९.	क्षुल्लक श्री विश्वबन्धु सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४०.	क्षुल्लक श्री विश्वज्ञेय सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४१.	क्षुल्लक श्री विश्वरक्ष सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४२.	क्षुल्लक श्री विश्वक्षित सागर जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४३.	क्षुल्लिका विप्रदाश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४४.	क्षुल्लिका विसुदृढ़श्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४५.	क्षुल्लिका विश्रमाश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४६.	क्षुल्लिका विनिग्रहश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४७.	क्षुल्लिका विरोचनाश्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४८.	क्षुल्लिका विपदमा श्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
४९.	क्षुल्लिका विकण्ठ श्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
५०.	क्षुल्लिका विश्वसिद्धि श्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
५१.	क्षुल्लिका विज्ञप्ति श्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
५२.	क्षुल्लिका विश्वनेहा श्री माता जी	प.पू.गणा.श्री विरागसागरजी महामुनिराज	
१.	पू. मुनिश्री सुपार्श्वसागर जी महाराज	पू.आ.श्री सन्मतिसागर जी महाराज	
२.	श्रमणी आर्यिका चिन्तनमती माता जी	प.आ.श्री चन्द्रसागर जी महाराज	
३.	क्षुल्लिका सुश्रेयमती माता जी	पू. मुनि सुपार्श्वसागर जी महाराज	

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ
के उपसंघों के वर्षायोग- २०१९ का विवरण

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	वर्षायोग स्थान/ सम्पर्क सूत्र
१.	श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज श्रमण श्री विश्ववीर सागर जी मुनिराज श्रमण श्री सुव्रतसागर जी मुनिराज श्रमण श्री अनुत्तर सागर जी मुनिराज श्रमण श्री अनुपम सागर जी मुनिराज श्रमण श्री आराध्य सागर जी मुनिराज श्रमण श्री प्रणेय सागर जी मुनिराज श्रमण श्री सर्वार्थ सागर जी मुनिराज श्रमण श्री साम्यसागर जी मुनिराज श्रमण श्री समत्व सागर जी मुनिराज श्रमण श्री सदय सागर जी मुनिराज श्रमण श्री संकल्प सागर जी मुनिराज श्रमण साम्य सागर जी मुनिराज श्रमण श्री सदभाव सागर जी मुनिराज श्रमण श्री साक्ष्य सागर जी मुनिराज श्रमण श्री संजयंत सागर जी मुनिराज श्रमण श्री सारस्वतसागर जी मुनिराज श्रमण श्री संयत सागर जी मुनिराज	प. पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी पू. श्रमणाचार्य विशुद्धसागर जी मुनिराज	श्री महावीर कीर्ति स्तंभ भिण्ड (म.प्र.) स.सूत्र- नीरज जैन पुजारी मो. ९८२६७६१६१७ विवेक मोदी मो. ९८२६२४९४२९
२.	श्रमणाचार्य श्री विशद सागर जी महाराज श्रमण श्री विशाल सागर जी मुनिराज श्रमणी आर्यिका भक्तिभारती माताजी ऐलक विदक्षसागर जी क्षुल्लक विसोम सागर जी क्षुल्लिका वात्सल्य भारती माता जी	प. पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज श्रमणाचार्य विशदसागर जी महाराज	श्री दिग.जैन अहिंसा मंदिर ललिताराव पुल हरिद्वार उत्तराखण्ड स.सूत्र-मो. ०१३३-४२२२८१० बा.ब्र. ज्योति दीदी मो. ९९१०७३९२२०
३.	श्रमणाचार्य श्री विभवसागर जी श्रमण श्री विभाश्वर सागर जी श्रमण श्री आचार सागर जी श्रमण श्री शुद्धात्म सागर जी श्रमण श्री सिद्धात्म सागर जी श्रमणी आर्यिका अर्हंश्री माता जी क्षुल्लिका आराधनाश्री माता जी क्षुल्लिका संस्तुतिश्री माता जी	प. पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज प. पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज प.पू.श्रमणाचार्य विभवसागर जी महाराज	श्री दिग. जैन शान्तिनाथ अग्रवाल मंदिर कृषि उपज मण्डी के सामने निवाई जिला-टोंक (राजस्थान) स.सूत्र- श्री सुशील जी आरामशी श्री विष्णु वोहरा मो. ९२१४०२२११६

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
४.	पू.श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी मुनिराज पू. श्रमण श्री विचिन्त्य सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री विजेयसागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री विश्वार्य सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री विश्वार्थ सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री विध्रुव सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री विव्रत सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री विशुभ्र सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री विशम सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री विश्वांक सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री विश्वार्क सागर जी मुनिराज श्रमणी आर्यिका विद्यान्तश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विमलान्तश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विक्रान्तश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विश्वान्तश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विद्वान्तश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विजयान्तश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विभान्तश्री माता जी श्रमणी आर्यिका विनयांतश्री माता जी श्रमणी आर्यिका विजिताश्री माताजी ऐलक श्री विश्वज्ञ सागर जी क्षुल्लक श्री विश्वाभ सागर जी क्षुल्लिका विदेहान्तश्री माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज पू.श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी मुनिराज	श्री दिग.जैन पंचायत बड़ा मंदिर दुर्ग, (छ.ग.) ४९१००१ स.सूत्र- श्री सुभाष वाकलीवाल अध्यक्ष मो. ९८२७९७३७१० श्री सुदीप लुहाड़िया मंत्री मो. ९३०२०३५६३२
५.	श्रमणाचार्य (घोषित) श्री विहर्षसागर जी मुनिराज श्रमण श्री विजयेश सागर जी मुनिराज क्षुल्लक विश्वोत्तर सागर जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज पू.गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज	श्री दिग.जैन मंदिर डी-ब्लाक कमला नगर, आगरा (उ.प्र.) स.सूत्र-बा.ब्र.प्रियंका दीदी मो.८८१०६०९६८२ श्री जगदीश जैन, ९३५९९०६७२१
६.	पू.श्रमणाचार्य विनिश्चय सागर जी मुनिराज पू. श्रमण श्री नेमीसागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री प्रांजल सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री प्रवीर सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री प्रवर सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री प्रत्यक्षसागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री प्रज्ञान सागर जी मुनिराज क्षुल्लक श्री वीर सागर जी मुनिराज क्षुल्लक श्री प्रज्ञान्स सागर जी मुनिराज क्षुल्लक श्री प्रतीर्क सागर जी मुनिराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज आ.श्री सुमति सागर जी मुनिराज श्रमणाचार्य विनिश्चय सागर जी मुनिराज श्रमणाचार्य विनिश्चय सागर जी मुनिराज श्रमणाचार्य विनिश्चय सागर जी मुनिराज श्रमणाचार्य विनिश्चय सागर जी मुनिराज श्रमणाचार्य विनिश्चय सागर जी मुनिराज पू.आ. कल्याण सागर जी श्रमणाचार्य विनिश्चय सागर जी मुनिराज श्रमणाचार्य विनिश्चय सागर जी मुनिराज	श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन अटा मंदिर ललितपुर (उ.प्र.) स.सूत्र-ब्र. श्रीपाल भैया जी मो. ९८९३९९६१३१

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
७.	पू.श्रमणाचार्यश्री विमदसागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री प्रक्षाल सागर जी मुनिराज क्षुल्लक श्री परिणाम सागर जी महाराज	पू.गणाचार्य श्री विरागसागरजी महामुनिराज पू.श्रमणाचार्य श्री विमदसागर जी मुनिराज पू.श्रमणाचार्य श्री विमदसागर जी मुनिराज	श्री दिग. जैन मंदिर पारसोला जिला-प्रतापगढ़ (राज.) ३१३६१४ स.सूत्र- अनिल जैन, ९५७१३१४०९० वीरेन्द्र जैन, ९००१२८१९०४
८.	पू.श्रमणाचार्य श्री विनम्रसागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री विज्ञसागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री विनतसागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री विनयसागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री विनन्दसागर जी मुनिराज श्रमणी आर्यिका विमलश्री माता जी श्रमणी आर्यिका विनेहश्री माता जी श्रमणी आर्यिका विषम श्री माता जी श्रमणी आर्यिका विपतश्री माता जी श्रमणी आर्यिका विपुलश्री माता जी श्रमणी आर्यिका विश्रयश्री माता जी श्रमणी आर्यिका विमुदश्री माता जी ऐलक श्री विनुतसागर जी महाराज क्षुल्लक श्री विश्वकुन्द सागर जी क्षुल्लिका विश्वश्री माता जी क्षुल्लिका विश्रांतश्री माता जी	पू.गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज पू.श्रमणाचार्य श्री विनम्रसागर जी मुनिराज पू.श्रमणाचार्य श्री विनम्रसागर जी मुनिराज	श्री दिग.जैन मंदिर जैन भवन स्कीम १० अलवर (राज.) पिन ३०१००१ स.सूत्र- श्री खिल्ली राम जैन, मो. ९४१४०१६१७० श्री अजित कुमार जैन मो. ९४१४८४६२५६
९.	पू.श्रमणाचार्य श्री विकर्ष (प्रज्ञ) सागर जी संघस्थ ब्रह्मचारी भैया श्री	पू.गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज श्रमणाचार्य विकर्ष (प्रज्ञ) सागर जी	श्री रत्नत्रय दिग.जैन मंदिर द्वारका सेक्टर-१० दिल्ली
१०.	पू. श्रमणाचार्य श्री विबुद्धसागर जी मुनिराज संघस्थ ब्रह्मचारी भैया		श्री सम्मेद शिखर जी मधुवन (झारखण्ड)
११.	पू. श्रमण श्री विश्वयश सागरजी मुनिराज पू. श्रमण श्री आत्मसागर जी मुनिराज	पू.गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज पू. आचार्य संभव सागर जी महाराज	आ.सुमति सागर जी त्यागी व्रती आश्रम (मधुवन) श्री सम्मेदशिखर जी (झार.)
१२.	पू.श्रमण श्री विशोक सागर जी मुनिराज पू. श्रमण श्री विश्वविजय सागर जी मुनिराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज	श्री चन्द्रप्रभु दिग. जैन मंदिर मुन्नालाल जैन कागजी धर्मशाला चारवाग, सब्जीमण्डी लखनऊ (उ.प्र.) स.सूत्र- संजीव जैन, ९४१५०१७८२४ विकास जैन, ९४१५१०२७६४
१३.	पू.श्रमण श्री विनिश्चय सागर जी मुनिराज क्षुल्लक श्री विभद्रसागर जी महाराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज	श्री दिग. जैन अतिशय क्षेत्र दहीगांव जिला-सोलापुर (महा.) स.सूत्र- डॉ.धीरज धन्यकुमार मेहता, मो. ७९७२४०६१७४, ९९६०००३२०८ श्रीमती मीनाक्षी गांधी, ९०९६८६३०११

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
१४.	पू. श्रमणश्री विश्वेश सागर जी मुनिराज संघस्थ ब्रह्मचारी भैया जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	श्री चन्द्रप्रभु दिग.जैन मंदिर चौधरी बाजार कटक (उड़ीसा) स.सूत्र-श्री कमल धनावत मो.९४३७०२८२४८ श्री भागचन्द्र बाकलीवाल मो. ९४३७०४४०१४
१५.	पू. श्रमण श्री विशेषसागर जी मुनिराज संघस्थ ब्रह्मचारी भैया जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज	श्री दिग.जैन मंदिर मुलावा (महा.)
१६.	पू. श्रमण श्री विश्रुतसागर जी मुनिराज क्षुल्लकक श्री निर्भीकसागर जी महाराज	पू.श्रमणाचार्य श्री विनिश्चयसागर जी महाराज आ.निर्भयसाग जी महाराज	श्री दिग.जैन पदमावती पोरवाल पंचायती बड़ा मंदिर पुरानी बस्ती एटा (उ.प्र.) स.सूत्र.-पदम जैन अध्यक्ष मो. ८२७९९५६७९२ विनय जैन, ९८३७११३८०२
१७.	श्रमण श्री मनोज्ञसागर जी मुनिराज श्रमण श्री विश्वलोकेश सागर जी श्रमणी आर्यिका विश्वधर्मश्री माता जी	पू. श्रमणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज पू. श्रमणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज पू. श्रमणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज	श्री दिग.जैन वीसपंथी कोठी, मधुवन श्री सम्मेद शिखर जी
१८.	श्रमण श्री अर्पणसागर जी मुनिराज	पू. श्रमणाचार्य निनिश्चयसागर जी मुनिराज	श्री दिग. जैन मंदिर पारसनाथ वीजापुर
१९.	पू.श्रमण श्री प्रशमसागर जी मुनिराज पू. श्रमण श्री सुयशसागर जी मुनिराज	पू. गणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज पू. गणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज	श्री दिग. जैन मंदिर फाफाडीह रायपुर (छत्तीसगढ़)
२०.	पू. श्रमण श्री विश्वतीर्थ सागरजी मुनिराज संघस्थ ब्रह्मचारी भैया जी	पू.गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज	श्री सिद्ध क्षेत्र कुन्थल गिरि (महाराष्ट्र)
२१.	पू. श्रमणश्री विश्वाससागर जी मुनिराज (आचार्य श्री विनीत सागर जी के साथ)	पू.गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज	विनीतधाम (राजस्थान)
२२.	पू.श्रमण श्री प्रथमसागर जी मुनिराज	पू.गणाचार्य श्री विमदसागर जी मुनिराज	श्री दिग.जैन पदमावती धाम तिजारा जी अलवर (राजस्थान)
२३.	पू.श्रमण श्री सुप्रभसागर जी मुनिराज	पू.गणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज	विद्या विहार मडावरा जिला- ललितपुर
२४.	पू.श्रमण श्री आचरणसागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री अध्यापन सागर जी मुनिराज	पू.गणाचार्य श्री विभवसागर जी मुनिराज पू.गणाचार्य श्री विभवसागर जी मुनिराज	श्री बीसहुमड़ दिग. जैन मंदिर करमाला तर फरमाला- सोलापुर (महाराष्ट्र) स.सू.-श्रीअशोक दोशी,९४२३३३८४७
२५.	पू.श्रमण श्री संस्कार सागर जी मुनिराज	पू.गणाचार्यश्री विनिश्चय सागरजी मुनिराज	श्री पार्श्वनाथ दिग.जैन मंदिर चम्पाबाग लश्कर, ग्वालियर,६२६३६०२५५८ स.सू.-वीरेन्द्रगंगवाल, ९४२५११०८१३

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
२६.	पू. श्रमण श्री अरिजित सागर जी मुनिराज पू. श्री प्रवण सागर जी मुनिराज	पू. श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज पू. श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज	श्री दिग. जैन शान्तिनाथ मंदिर गंज, बैतूल (म.प्र.) सं.सू.-योगेश जैन, ९४०६५३७२२८
२७.	पू.श्रमण श्री आदित्य सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री अप्रमितसागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री सहजसागर जी मुनिराज	पू.श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज पू.श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज पू.श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज	श्री दिग.जैन संस्कृत महाविद्यालय वर्णी भवन मोराजी सागर (म.प्र.)
२८.	पू.श्रमण श्री आस्तिक्य सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री प्रणीत सागर जी मुनिराज	पू.श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज पू.श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज	श्री दिग. जैन मंदिर पन्ना (म.प्र.)
२९.	पू.श्रमण श्री विभंजन सागर जी मुनिराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज	श्री दिग.जैन मंदिर वरूण पथ जयुपर
३०.	पू.श्रमण श्री विहसंत सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री विश्वसूर्य सागर जी मुनिराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज	श्री दिग.जैन अतिशय क्षेत्र बरासो जिला-भिण्ड सं.सू.- श्री सुमेरचन्द्र जैन मो. ८८१९८७८१४३ प्रभाष चन्द्र जैन, ९९२६६१४२१३
३१.	पू.श्रमण श्री विश्रांतसागर जी मुनिराज क्षुल्लक श्री विश्वोत्तम सागर जी महाराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज	श्री दिग. जैन पंचायत छोटा घड़ा नसियाँ सुभाष उद्यान मार्ग अजमरे सं.सू.-कोमलचन्द्र, ९४१४२५८५७० श्री नरेन्द्र, मो. ८८५२०६१८७१
३२.	पू.श्रमण श्री विकसंत सागर जी मुनिराज पू. श्रमण श्री आवश्यकसागर जी मुनिराज श्रमणी श्री समिति श्री माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज पू.श्रमणाचार्य श्री विभवसागर जी महाराज पू.श्रमणाचार्य श्री विभवसागर जी महाराज	श्री दिग. जैन मंदिर बागी दौरा जिला- वासवाड़ा (राजस्थान)
३३.	पू. श्रमण श्री विभक्त सागर जी मुनिराज	श्रमणाचार्य श्री विशदसागर जी महाराज	----
३४.	पू.श्रमण श्री प्रणुत सागर जी मुनिराज पू. श्रमण श्री सम्पूर्ण सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री साध्यसागर जी मुनिराज	पू.श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज	श्री दिग. जैन मंदिर बुरहान पुर (म.प्र.)
३५.	पू.श्रमण श्री अध्ययन सागर जी मुनिराज	पू.श्रमणाचार्य श्री विभवसागर जी मुनिराज	श्री दिग.जैन अतिशय क्षेत्र णमोकार क्षेत्र नासिक (महा.)
३६.	पू.श्रमण श्री अर्हंतसागर जी मुनिराज	पू.श्रमणाचार्य श्री विभवसागर जी मुनिराज	संकटहरण पार्श्वनाथ दिग. जैन मंदिर ऋद्धितीर्थ लसूरिया परमार, इन्दौर
३७.	पू. श्रमण श्री विश्वदृगसागर जी मुनिराज पू. श्रमण श्री विरंजन सागर जी मुनिराज क्षुल्लक श्री विसौम्य सागर जी महाराज क्षुल्लिका विशीलाश्री माता जी	पू.श्रमणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज पू.श्रमणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज पू.श्रमणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज पू.श्रमणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज	श्री दिग. पंचायती बडा मंदिर बडा मलहरा, जिला- छतरपुर (म.प्र.) सं.सू- राजेन्द्र जैन, ९९९३४८५७०१ सतीस मोदी, ९७५४३८४३५५
३८.	पू.श्रमण श्री विश्वाक्षसागर जी महाराज	पू.श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी मुनिराज	---

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
३९.	पू.श्रमणश्री प्रथमानन्द जी मुनिराज श्रमणी आर्यिका प्रयागमती माता जी	पू. श्रमणाचार्य विकर्ष (प्रज्ञ) सागर जी मुनिराज	श्री दिग. जैन मंदिर गली नं. २ कैलाश नगर दिल्ली
४०.	पू.श्रमण श्री प्रतिज्ञानन्द जी मुनिराज	पू.श्रमणा. विकर्ष (प्रज्ञ) सागर जी मुनिराज	श्री दि.जैनमंदिर सी-२ जनकपुरी देहली
४१.	गणिनी श्रमणी आ. विशाश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विपश्यन्तश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विमुक्तश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विदर्शनाश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विशुद्धश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विसिद्धश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विशुचिश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विश्रुतिश्री माताजी क्षुल्लिका विश्रितश्री माताजी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज गणिनी आर्यिका विशाश्री माताजी गणिनी आर्यिका विशाश्री माताजी गणिनी आर्यिका विशाश्री माताजी गणिनी आर्यिका विशाश्री माताजी गणिनी आर्यिका विशाश्री माताजी	वर्षायोग समिति हुवली (कर्नाटक)
४२.	गणिनी श्रमणी आर्यिका विभाश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विनयश्री माताजी श्रमणी आर्यिका सर्वश्री माताजी श्रमणी आर्यिका शुभश्री माताजी श्रमणी आर्यिका सिद्धिश्री माताजी श्रमणी आर्यिका संयमश्री माताजी श्रमणी आर्यिका साम्यश्री माताजी श्रमणी आर्यिका समयश्री माताजी क्षुल्लिका शीलश्री माताजी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज गणिनी आर्यिका विभाश्री माता जी गणिनी आर्यिका विभाश्री माता जी गणिनी आर्यिका विभाश्री माता जी गणिनी आर्यिका विभाश्री माता जी गणिनी आर्यिका विभाश्री माता जी गणिनी आर्यिका विभाश्री माता जी गणिनी आर्यिका विभाश्री माता जी गणिनी आर्यिका विभाश्री माता जी	श्री पार्श्वनाथ भवन दंग की नसिया फतेहपुरी गेट के पास बजाज रोड सीकर (राजस्थान) स.सू.-श्री विनोद सेठी, मंत्री मो. ९३५१३७२९८४ महामंत्री- महेश वाकलीवाल, अध्यक्ष मो. ९५०९९७९९८९
४३.	गणिनी श्रमणी आर्यि. विन्ध्यश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विद्वतश्री माताजी श्रमणी आर्यिका सुन्दनश्री माताजी श्रमणी आर्यिका सुवन्दनश्री माताजी क्षुल्लिका पर्वश्री माताजी क्षुल्लिका सुचन्दनश्री माताजी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज गणिनी आर्यिका विन्ध्यश्री माताजी	श्री दिग. जैन मंदिर जैन टेम्पल रोड़ डीमापुर (नागालैण्ड) सं.सू.- प्रकाश अजमेरा मो. ९४३६०००७२ ओम प्रकाश सेठी मो. ९४३६००२९७१
४४.	गणिनी श्रमणी आर्यि. विज्ञाश्री माता जी श्रमणी आर्यिका विकक्षाश्री माता जी श्रमणी आर्यिका ज्ञानश्री माता जी श्रमणी आर्यिका ज्ञाताश्री माता जी श्रमणी आर्यिका ज्ञप्तिश्री माता जी श्रमणी आर्यिका ज्ञेम्याश्री माता जी श्रमणी आर्यिका ज्ञायकश्री माता जी श्रमणी आर्यिका ज्ञेयकश्री माता जी क्षुल्लिका विभद्राश्री माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माता जी पू. गणाचार्यश्री विरागसागर जी महाराज	श्री दि.जैन मंदिर वरूण मान सरोवर जयपुर (राजस्थान) अध्यक्ष- एम.पी. जैन, ९८२९२५०७७० बा.ब्र. मुनमुनदीदी,

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
४५.	श्रमणी आर्यिका विदुषीश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विनीतश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विकम्पाश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विरतश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विरदश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विनोदश्री माताजी क्षुल्लिका विभूषणाश्री माताजी क्षुल्लिका विश्वशान्ताश्री माताजी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी मुनिराज	श्री दिग. जैन मंदिर जैन भवन मेन रोड दिनहटा (पं. बंगाल) सं.सू.- अशोक जैन, मो. ९४३४०३७३११, ९८००७११७११ दिनेश यादव मो. ९१३१६९६१७०
४६.	श्रमणी आर्यिका विबोधश्री माताजी श्रमणी आर्यिका वियुक्तश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विवक्षाश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विप्रभाश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विचक्षणाश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विमोचनाश्री माताजी क्षुल्लिका विभूषाश्री माताजी क्षुल्लिका विभाषाश्री माताजी क्षुल्लिका विक्षमाश्री माताजी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज	श्री पार्श्वनाथ दिग.जैन मंदिर जैन भवन चौक गया (विहार) स.सू.-मधुकान्त काला मंत्री मो. ९४३००७२१९८ महामंत्री- अमूल्य अजमेरा मो. ६२०३७००४८०
४७.	श्रमणी आर्यिका विविक्तश्री माताजी श्रमणी आर्यिका विजिगिसाश्री माताजी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागरजी महामुनिराज	श्री दिग. जैन मंदिर फतेहपुर जिला-बाराबंकी (उ.प्र.) सं.सू.- विजय कुमार जैन प्रान्सु जैन
४८.	श्रमणी आर्यिका विनतश्री माता जी क्षुल्लिका विक्रमाश्री माताजी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज	श्री दि.जैन मंदिर परायठा जिला-सागर (म.प्र.)
४९.	श्रमणी आर्यिका विशाखाश्री माता जी क्षुल्लिका विरजाश्री माताजी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज	श्री दि.जैन तेरह पंथी कोठी, मधुवन श्री सम्मेद शिखर जी
५०.	श्रमणी आर्यिका विदक्षाश्री माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज	श्री दि.जैन मंदिर सनावद (म.प्र.)
५१.	श्रमणी आर्यिका विकाम्याश्री माता जी श्रमणी आर्यिका विगुंजनश्री माता जी क्षुल्लिका विस्मिताश्री माता जी क्षुल्लिका विरजश्री माता जी क्षुल्लिका विगम्याश्री माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज	श्री दि.जैन मंदिर इलाहाबाद (उ.प्र.)
५२.	श्रमणी आर्यिका ज्ञेयश्री माता जी श्रमणी आर्यिका दीक्षाश्री माता जी	गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी गणिनी आर्यिका सौभाग्यमती माता जी	श्री दि.जैन मंदिर पूना (महा.)
५३.	श्रमणी आर्यिका विनिवृताश्री माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज	---

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	चातुर्मास स्थान/ सम्पर्क सूत्र
५४.	श्रमणी आर्यिका समर्थश्री माताजी श्रमणी आर्यिका सार्थकश्री माताजी	पू. गणाचार्य श्री विमदसागर जी मुनिराज	श्री दिग. जैन मंदिर विजयनगर (गुज.)
५५.	श्रमणी आर्यिका ओमश्री माताजी श्रमणी आर्यिका संस्कृतिश्री माताजी	पू. गणाचार्य श्री विभवसागर जी महामुनिराज	श्री आदिनाथ दिग.जैन मंदिर रामगढ़ जिला-डूगरगढ (राजस्थान) स.सू.-अशोक जैन, ९९२८७२३०२०
५६.	क्षुल्लक श्री विगुणसागर जी महाराज	पू. श्रमणाचार्य श्री विशदसागरजी महाराज	भगवान शीतलनाथ जन्म भूमि भदलपुर इटखोरी (झारखण्ड)
५७.	क्षुल्लक श्री विश्वप्रभु सागर जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज	श्री दि.जैन मंदिर वीना (म.प्र.)
५८.	क्षुल्लक श्री विदेहसागर जी महाराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज	---
५९.	क्षुल्लिका विजिताश्री माताजी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज	----
६०.	क्षुल्लिका ह्रीश्री माताजी क्षुल्लिका सिद्धिश्री माता जी	पू. श्रमणाचार्य श्री विभवसागर जी मुनिराज	श्री दि.जैन मंदिर रायपुर (म.प्र.)

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महमुनिराज ससंघ पावन वर्षायोग २०१९

	संघ	प.पू.गणा.	प.श्रमणा.	श्रमण	गणिनी	श्रमणी	ऐलक	क्षुल्ल.	क्षुल्लि.	योग
मूल संघ	१	१	–	२१	–	१६	१	५	११	५५
संघ	६०	–	१०	९०	४	७१	३	१५	२५	२१८
योग	**६१**	**१**	**१०**	**१११**	**४**	**८७**	**५**	**२०**	**३६**	**२७३**
पू. गणाचार्यश्री		१	–	–	–	–	–	–	–	१
शिष्य		–	९	४०	४	४१	१	११	२३	१२९
प्रशिष्य		–	१	६८	–	४४	३	७	१२	१३५
अन्य		–	–	३	–	२	१	४	१	१४
योग		**१**	**१०**	**१११**	**४**	**८७**	**४**	**२०**	**३६**	**२७३**

प्रान्त-स्थान	पं. बंगाल	म.प्र.	राजस्थान	उत्तराखण्ड	छत्तीसगढ़	उ.प्र.	दिल्ली	झारखण्ड	महाराष्ट्र
	२	१२	११	१	३	७	३	५	७
प्रान्त स्थान	**उड़ीसा**		**कर्नाटक**	**नागालैण्ड**	**विहार**	**गुजरात**			
	१		१	१	१	१			

विराग सेतु

वावीस-विरागो

(प.पू. राष्ट्र संत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज)

डॉ. उदयचन्द्र जैन

जिन्होंने अल्प वय में ही मोक्षमार्ग पर आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त किया, घनघोर उपसर्गों में भी समता धारण कर आत्मान्वेषी रहे, ज्ञान की अथाह गहराईयों में डुबकी लगाकर प.पू. आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी के प्राचीन ग्रंथ वारसाणु पेक्खा पर संस्कृत 'सर्वोदय टीका' को लिखकर जिनागम के लिए एक दुर्लभ रत्न प्रदान किया है। ऐसे सिद्धांतरत्न प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर महाराज के जीवन दर्शन का सुंदर हृदयस्पर्शी चित्रण करने वाले डॉ. उदयचंद्र जैन उदयपुर के विराग चेतना युक्त नवीन प्राकृत महाकाव्य 'विराग-सेतु' की क्रमिक प्रस्तुति-

णम्मीभवो णमिद-तित्थ-पणीद-सत्थं
अत्थं लहेदि सरदे मुणदे पदत्थं।
चरित्त-चित्त-चरियं परमत्थ-पत्थं
इच्छेदि सागर समं गाहिरं पसत्थ।। ३९।।

वे सदा नम्रीभूत तीर्थ प्रणीत शास्त्र के प्रति नमित/समर्पित हैं, वे शास्त्र के अर्थ को लक्ष्य बनाते, उन्हें स्मरण करते और पदार्थ की ओर अग्रसर होते हैं। वे चारित्र चित्त की चर्या एवं परमार्थ के पत्थ की इच्छा करते हैं तथा सागर के समान गहरे प्रशस्त मार्ग की ओर अग्रसर होते हैं।

काएण-खीण-पबलो पबलो हि अज्ज
एगग्ग-चिंतण-मुणंत-समग्ग-मग्गं।
सत्थे णिबद्ध-रदणं रदणं गहीरं,
विज्जामुणीसर-गुणं चिद-णंत भागं।। ४०।।

वे काय से क्षीण होते हुए प्रबल हैं वे प्र-प्रकर्ष/आत्म विकर्ष से बल/ शक्ति युक्त आज एकाग्र चिंतन-मनन एवं सम के अग्ग-श्रमण के अग्र गुण रूपी मग्ग/ मार्ग-रत्नत्रय मार्ग को बल देते हैं इसलिए प्रबल है। वे शास्त्र में निरुपित रत्न को गम्भीर रत्न/ कठिनाई से प्राप्त होने वाले रत्न मानते हैं तभी तो शास्त्र में लीन विद्या मुनीश्वर/ आचार्य विद्यानंद के गुण एवं चितस्वरूप के अनंत भाग की ओर दृष्टि किए हुए हैं।

णिच्चं च सत्थ णवणीद-लहंत-सम्मं,
जत्थेव पत्तदि तधेव धरेदि चित्तं।
सीसो विराग-मुणिवरस्य विराग-पुण्णो
तेसिं रदो वद्यादो पणवीस-कालो।। ४१।।

मुनि विकर्षसागर पच्चीस की अवस्था में व्रतों से नत विराग पूर्ण ही आचार्य विरागसागर के शिष्य बने रहना चाहते हैं। उन्हें जहाँ भी जैसे भी हो सम्यक् शास्त्र नवनीत प्राप्ति की ओर अग्रसर उसी का ओर चित्त लगाते हैं।

वाणी सरस्सइ-सुदागम-पुण्ण-सोहे
ओजस्सि-सत्थ-परिपुण्ण-जणाण मोहे।
आगच्छिदूण जुव-जोव्वण-जुत्त-सव्वे
सम्मं णमोत्थु कुणिदूण लहेंति णाणं।। ४२।।

जिनकी वाणी में सरस्वती के श्रुतागम के पूर्ण भाव निहित हैं, जो ओजस्वी बनाते हैं, उनके सूत्रार्थ पूर्ण वचनों से जनों के हर्ष उत्पन्न होता है। युवा यौवन की गति वाले सभी यहाँ आकर सम्यक् **नमोस्तु** करते हैं और नमन करके भी उनसे ज्ञानलाभ करते हैं।

अब्भास-वागरण-सत्तु-मणे धरेदि
तस्सिं रदो लिहदि चिंतदि सम्म-अत्थं।
विज्जागुरस्स चरणेसु पणम्म-भूदो
सद्दत्थ-सत्थ-परमागम-तित्थ-वाणिं।। ४३।।

विकर्षसागर तो व्याकरण सूत्रों में मन स्थिर करते हैं, उसमें लीन उनके सम्यक् अर्थ को लिखते हैं और उनका चिन्तन करते हैं। वे विद्या के गुरु/ आचार्य विद्यानन्द के चरणों में प्रणम्यभूत शब्दार्थ, शास्त्रार्थ परमभागमार्थ एवं तीर्थ वाणी को समझते हैं।

णम्भीपदे गुरुविराग-विराग-सेयो
मण्णेदि बाल-हिद-बुद्धि-विगास-इट्ठो।
संतो सदा चरदि पंचविहं चरित्तं
साहुत्त-आवसगुणेसु विकस्स् साहू।। ४४।।

विकर्षसागर साधुत्व के आवश्यक गुणों में लीन होकर ही अपना विकर्ष कर रहे हैं। वे सदा शांत पंचविध चरित्र-पंचाचार का पालन कर रहे हैं। पर वे गुरुक विरागसागर के विराग एवं श्रेय युक्त उनके पदों में नम्रीभूत हैं तथा वे स्वयं ही बालकों के हित, उनकी बुद्धि विकास में प्रवृत्त भी दिखते हैं एवं बुद्धि विकास को इष्ट मानते हैं।

सो मालती वि पिटु-खेम-सहाव-खेमो,
पुत्तो विदीवग-कुलो वि विराग-सूरि।
संहो विकस्स-मुणि-विज्जधणी हि सोहे
कव्वो इमं णियय-कव्व कलं च इच्छं।। ४५।।

जो कुल का पुत्र दीपक था, जो माता मालती एवं पिता खेमचंद्र के क्षेम स्वभाव का धनी था, वही विराग से आचार्य विरागसागर के संघ में विकर्ष सागर मुनि तो विद्या में निमग्न इस काव्य के प्रेरक हुए इसलिए कि प्राकृत, संस्कृत आदि में काव्य-कला युक्त काव्य कर सकें।

इदि वावीस विरागो सम्मत्तो

◆◆◆◆

क्रमश.....

अगस्त माह के महोत्सव दिवस

जन्म/दीक्षा/पुण्यतिथि	तारीख	स्थान /नाम
जन्म दिवस	२.८.१९७२	गैसावाद (म.प्र.) गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी
पुण्य तिथि	२.८.२००३	भिलाई (छ.ग.) मुनि श्री विश्वधर्म सागर जी
जन्म दिवस	३.८.१९८३	भिलाई (छ.ग.) आर्यिका वियुक्तश्री माताजी
जन्म दिवस	३.८.१९४७	अहमदाबाद, क्षुल्लिका विक्षमाश्री माता जी
जन्म दिवस	५.८.१९७२	रूर (भिण्ड), आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज
जन्म दिवस	६.८.१९९०	पन्ना (म.प्र.), आर्यिका विजिगिज्ञाश्री माता जी
जन्म दिवस	७.८.१९८८	असोखर (भिण्ड), आर्यिका विसंयोजना श्री माताजी
दीक्षा दिवस	९.८.१९९२	द्रोणगिरि (ऐलक) श्री विनम्रसागर जी
जन्म दिवस	१०.८.१९८५	भिलाई (छ.ग.) आर्यिका विचक्षणाश्री माता जी
जन्म दिवस	१०.८.१९७५	गया जी (विहार) आर्यिका विवक्षाश्री माता जी
जन्म दिवस	१२.८.१९८३	जगदलपुर (छ.ग.) मुनि श्री विहसंत सागर जी
जन्म दिवस	१२.८.१९८९	भिण्डर (राज.) आर्यिका विकुन्दन श्री माताजी
जन्म दिवस	१५.८.१९६४	दिल्ली, क्षुल्लक श्री विदेह सागर जी
जन्म दिवस	१६.८.१९८२	विग्रा (रायसेन), मुनिश्री विदाम्बर सागर जी
दीक्षा दिवस (ऐलक)	१८.८.१९९९	भिण्ड, आचार्य श्री विकर्ष (प्रज्ञ) सागर जी
जन्म दिवस	२०.८.१९९५	पवई, आर्यिका विजिज्ञासाश्री माताजी
पुण्य तिथि	२०.८.२०१५	पथरिया, आर्यिका विहारश्री माता जी
जन्म दिवस	२०.८.१९७५	जसपुर, मुनिश्री विशेष सागर जी
जन्म दिवस	२२.८.१९५२	ललितपुर, आर्यिका विनोदश्री माताजी
जन्म दिवस	२२.८.१९८६	सिवनी, आर्यिका विदितश्री माताजी
पुण्यतिथि	२२.८.२०१७	ग्वालियर, आर्यिका विकुलश्री माताजी
जन्म दिवस	२२.८.२०१७	ग्वालियर, आर्यिका विकुलश्री माताजी
जन्म दिवस	२४.८.१९५९	आगरा, मुनिश्री विश्वानुत्तर सागर जी
दीक्षा दिवस	२९.८.२०१५	भीलवाड़ा (राज.) मुनिश्री सर्वार्थसागर जी, मुनिश्री साम्यसागर जी, मुनिश्री समर्थसागर जी, मुनिश्री सहजसागर जी, मुनिश्री समत्वसागर जी, मुनि श्री सम्पूर्ण सगार जी, मुनिश्री सदयसागर जी।

श्रावण मास के व्रत एवं कल्याणक महोत्सव

१७ जुलाई २०१९	श्रावण कृष्ण १	वीर शासन जयन्ति
१८ जुलाई २०१९	श्रावण कृष्ण २	श्री मुनि सुव्रतनाथ जी गर्भ कल्याणक
२५ जुलाई २०१९	श्रावण कृष्ण ८	अष्टमी व्रत
२७ जुलाई २०१९	श्रावण कृष्ण १०	श्री कुन्थुनाथ जी गर्भ कल्याणक
२८ जुलाई २०१९	श्रावण कृष्ण ११	रोहिणी व्रत
३१ जुलाई २०१९	श्रावण कृष्ण १४	चतुर्दशी व्रत
२ अगस्त २०१९	श्रावण शुक्ल १	श्री सुमतिनाथ जी गर्भ कल्याणक
६ अगस्त२०१९	श्रावण शुक्ल ६	श्री नेमीनाथ जी जन्म तप कल्याणक
७ अगस्त २०१९	श्रावण शुक्ल ७	श्री पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक, मुकुट सप्तमी
१५ अगस्त २०१९	श्रावण शुक्ल १५	श्री श्रेयांसनाथ जी मोक्ष कल्याणक रक्षा बन्धन, वात्सल्य पर्व

समाचार

दिग. जैन संतों का विशाल संघ वंगवासी हावड़ा पहुँचा

२ जून २०१९ को वंगवासी हावड़ा वासी श्री दिगम्बर जैन समाज को इतिहास में प्रथम बार ४८ पिच्छी के विशाल चतुर्विध संघ की अगवानी करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। विशाल संघाधिपति प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ की ४८ पिच्छीओं का वंगवासी हावड़ा की श्री दिगम्बर जैन महिला मण्डलों ने एवं दिग. जैन समाज ने अनेकों स्वागत द्वार बनाकर जगह-जगह पाद प्रक्षालन एवं मंगल आरती कर भव्य स्वागत कर अगवानी कर नगर प्रवेश कराया।

श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन मंदिर वंगवासी हावड़ा में भगवान श्री शान्तीनाथ जी का जन्म तप एवं मोक्ष कल्याणक के उपलक्ष में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के पावन सान्निध्य में भगवान शान्तिनाथ जी का पंचाभृताभिषेक एवं पू. गणाचार्य श्री के श्री मुख से जगत शान्ति प्रदाती शान्ति धारा के मंत्रोचारण के साथ भगवान के निर्वाण कल्याणक का मंत्रोचारण के साथ निर्वाण लाडू चढ़ाया गया।

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ का विवेक विहार क्लव हाउस में संत निवास रहा जहाँ प्रति दिन स्वाध्याय प्रवचन जिज्ञासा समाधान एवं आनन्द यात्रा के माध्यम अभूतपूर्व धर्म प्रभावन हुई।

८ जून को श्रुत पंचमी महोत्सव के अवसर पर जिनश्रुत की भव्य शोभायात्रा एवं वुद्धि ऋद्धि वर्धक विधान सम्पन्न हुआ। जिसमें पू. गणाचार्य श्री द्वारा सभी के वैदिक विकास हेतु अनुष्ठान पूर्व सरस्वती मंत्र प्रदान किया गया। प.पू. आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर के आचार्य पदारोहण दिवस पर विनयांजलि अर्पित की गई।

भव्यता के साथ अगवानी

१० जून २०१९ को प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ का वंगवासी हावडा से डवसन हावडा के लिये हुआ। डवसन जैन समाज एवं महिला मण्डलों ने प.पू. गणाचार्य श्री ससंघ का स्थान-स्थान पर भव्य स्वागत अभिनन्दन कर अगवानी की गई। प.पू. गणाचार्य श्री का अनेक स्थानों पर मंगल कलशों से पाद प्रक्षालन कर आरती उतारी गई एवं चवर दुराये गए। डवसन में चैत्यालय मंदिर में दर्शन कर पू. गणाचार्य श्री के श्री मुख से शान्तिधारा का उच्चारण किया गया। तत्पश्चात् श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन मंदिर में दर्शन कर पू. गणाचार्य श्री ने शान्तिधारा का वाचन किया एवं प्रवचन सभा भवन में आयोजित धर्म सभा में सभी को धर्मोपदेश के साथ अपना मंगल आशीष प्रदान किया।

श्री भक्तामर विधान सम्पन्न

१५ जून २०१९ को हावड़ा डवसन दिग. जैन मंदिर में प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ ४८ पिच्छी के पावन सान्निध्य में महिला मण्डल द्वारा ४८ मण्डलों पर ४८ जोड़ों के द्वारा भक्ताम्बर विधान भक्ति पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर उपस्थित जन समूह को प.पू. गणाचार्य श्री को धर्म देशना के साथ सभी मंगल आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

खानदेश में पहली बार ९९२ बच्चों पर उपनयन (जैन) संस्कार सम्पन्न

जामनेर (महाराष्ट्र) श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर जामनेर में प.पू. वात्सल्य दिवाकर आचार्य श्री १०८ विमलसागर जी महाराज के **रजत समाधि महोत्सव** वर्ष २०१८-१९ वे श्रुतपंचमी पर्व के शुभावसर पर खानदेश में पहली बार प.पू. उपसर्ग विजेता, गणाचार्य श्री १०८ विरासागर जी महाराज के सुशिष्य प.पू. श्रमण मुनिश्री १०८ विशेषसागर जी गुरुदेव के पावन सान्निध्य में दिनांक २.६.२०१९ से ७.६.२०१९ तक विरागोदय संस्कार शिविर व उपनयन संस्कार (जैन संस्कार) पं. शांतिलाल जी भिमावत अकोला व संगीतकार राजू रोकडे एण्ड पार्टी खामगांव के मार्गदर्शन में अभूतपूर्व धर्म प्रभावना के साथ सानंद सम्पन्न हुआ।

दिनांक ६.६.२०१९ को उपनयन संस्कार के अवसर पर पूज्य मुनिश्री ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा भगवान महावीर स्वामी ने उपदेश में कहा था कि व्यक्ति जन्म से नहीं कर्म से महान होता है, जैन कुल में जन्म लेने मात्र से कोई जैन नहीं होता, जो जिन की आज्ञा मानें, उनके मार्ग पर चले, नित्य देवदर्शन, पानी छानकर पीता हो व रात्रि भोजन का त्यागी हो वही जैन कहलाने का अधिकारी है। आज हर माता-पिता अपनी संतान को पढ़ा लिखाकर लायक बनाना

चाहती है, पर देखा व सुना जाता है कि धार्मिक संस्कार के अभाव में वहीं संतान बड़ा होकर माता-पिता को नालायक समझने लगता है। अपनी संतान को कम से कम इतना लायक, कमण्डल पकड कर साधु के साथ चलने लायक हो जाये।

पू. मुनिश्री ने आगे कहा कि आगम में १६ संस्कार का वर्णन है पर आज इन संस्कारों का अभाव होते जा रहा है, आज मात्र एक संस्कार ही याद है, वह है अंतिम संस्कार, मूर्ति से मूर्तिकार का परिचय होता है उसी प्रकार संतान के संस्कार से उनके माता-पिता का परिचय होता है। यदि आप अपने बच्चों का उत्थान-विकास चाहते हो तो २४ घंटे में कम से कम २४ मिनट अपनी संतान को अवश्य दें।

हे भाईयों-बहनों ध्यान दें जीवन लायक बनाने में पूरी उम्र भी कम पड़ जाती है और जीवन को नालायक बनाने में एक क्षण भी बहुत है।

इस उपनयन संस्कार (जैन संस्कार) के शुभ अवसर पर महाराष्ट्र राज्य के जल सम्पदा एवं वैद्यकीय शिक्षण मंत्री ना.श्री गिरीष जी महाजन इन्होंने मुनिश्री विशेषसागर जी महाराज के दर्शन किए और पश्चात् प.पू. वात्सल्य दिवाकर आ.श्री विमलसागर जी गुरुदेव के फोटो का अनावरण कर दीप प्रज्वलन किया। खान्देश के जलगाव जिले के जामनेर में पहली बार ९९२ बच्चों-बच्चियों पर उपनयन संस्कार (जैन संस्कार) किए गए। और बड़ी मात्रा में श्रावक-श्राविका और भक्तगण इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। बहुत ही अभुतपूर्व धर्म प्रभावना के साथ उपनयन संस्कार (जैन संस्कार) कार्यक्रम कस्तूरीबाई चंपालाल जी बोहरा मंगल कार्यालय जामनेर में सानंद सम्पन्न हुआ।

दिनांक ७.६.२०१९ को श्रुतपंचमी के शुभ अवसर पर श्रुतज्ञानवर्धक विधान सानंद अतिशय धर्म प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ। विधान के बाद वात्सल्य भोज की व्यवस्था की गई थी। सम्पूर्ण समाज ने बड़े हर्ष के साथ नगर में माँ जिनवाणी की शोभायात्रा निकाली और धर्मलाभ लिया।

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ का वर्षायोग २०१९ कलकत्ता में ही हो

दिनांक २३ जून को श्री दिगम्बर जैन मंदिर वेलगछिया उपवन में श्री दिग. जैन मुनि सेवा व्यवस्था समिति कलकत्ता द्वारा प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ, पू. आचार्य सुवलसागर जी महाराज संघ, पू. मुनिश्री सुपार्श्वसागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में एवं विशाल धर्म सभा का आयोजन किया गया। जिसमें कलकता हावड़ा के विभिन्न स्थानों से मंदिर समितियों, महिला मण्डलों ने व अनेक श्रावकों ने उपस्थित हो प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज से कलकत्तामें ही सन् २०१९ का वर्षायोग करने का निवेदन कर श्री फल चढ़ाया। आ. श्री सुबलसागर जी एवं मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज ने अपरी विनयांजलि अर्पित करते हुए कलकता जैन समाज व श्री दिगम्बर जैन मुनि सेवा व्यवस्था समिति के निवेदन को स्वीकार कर कलकत्ता में ही चातुर्मास करने का आग्रह किया। सभी की यही मंगल भावना है कि तीनों के श्रमण संघों का वर्षायोग एक साथ हो तो कलकत्ता के लिये यह एक एतिहासिक चातुर्मास होगा। विशाल चतुर्विध संघ के नायक प.पू. गणाचार्य श्री आगमिक चर्या के धनी अत्यन्त सहज, सरल, वात्सल्य की मूर्ति कुशल अनुशासक एवं अभीक्षण ज्ञानोपयोगी है जिनके चातुर्मास से जैन जैनेतर समाज कलकत्ता को धर्म लाभ के साथ धर्म संस्कारों को प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने अपने अमृतमयी उदबोधन में धर्मोपदेश के पुरुषार्थ करने रहने एवं समाज को एक जुट बने रहने के उपदेश के साथ अपना मंगल आशीष प्रदान किया।

दो आचार्यों का वात्सल्य पूर्ण मिलन चातुर्मास हेतु श्री फल भेंट किया

दिनांक १६ जून २०१९ को बुन्देलखण्ड के प्रथमाचार्य चर्या चूड़ामणि प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ (४८ पिच्छी) का हावड़ा से बेल गछिया कोलकत्ता के लिये विहार हुआ। श्याम बाजार में पू. आचार्य श्री सुव्रतसागर जी महाराज संघ का विशाल जन समुदाय की उपस्थिति में वात्सल्य पूर्ण मिलन हुआ। पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज ससंघ ने पू. गणाचार्य श्री तीन परिक्रमा दे आचार्य वंदना एंव पादप्रक्षालन कर भव्य अगवानी की तथा श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन मंदिर बेल गछिया के प्रवेश द्वार पर मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी ने प.पू. गणाचार्य श्री का पादप्रक्षालन आचार्य वंदनाकर भव्य अगवानी की। मंदिर जी प्रांगण में आयोजित धर्म सभा में स्थानीय विधायका श्रीमती माला शाह, प.पू. गणाचार्य श्री के दर्शनार्थ पधारी जिन्होंने प.पू. गणाचार्य श्री को श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया। विभिन्न महिला मण्डलों द्वारा मंगलाचरण एवं गुरु भक्ति की गई। बालिकाओं द्वारा भक्ति नृत्य की प्रस्तुति दी गई। पू.

मुनिश्री सुपार्श्वसागर जी एवं आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज द्वारा प.पू. राष्ट्रसंत श्री विरागसागर महामुनिराज के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की गई। सकल दिगम्बर जैन समाज कोलकत्ता ने वर्ष २०१९ का वर्षायोग कोलकत्ता में ही करने हेतु श्रीफल भेंट किया।

बड़ा बाजार कलकत्ता में हुआ मंगल प्रवेश

२४ जून २०१९ को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ का श्री दिग. जैन मंदिर वेलगछिया उपवन से बड़ा बाजार कलकता के लिये मंगल विहार हुआ। आ. सुवलसागर जी महाराज एवं मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज ससंघ द्वारा मंगल विदाई की गई। मार्ग में कई स्थानों पर श्रावको एवं महिला मण्डलों ने प.पू. गणाचार्य श्री का पादप्रक्षालन कर आरती उतारी गई। अनेक स्थानों पर महिला मण्डलों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई। १०८ थालों में प.पू. गणाचार्य श्री पाद प्रक्षालन कर एवं मंगल दीपकों से आरती कर श्री दिगम्बर जैन बडा मंदिर जी में प.पू.गणाचार्य श्री संघ का मंगल प्रवेश कराया गया। जहाँ प्रवचन सभा भवन में धर्म सभा में मंगलचरण संस्कृति कार्यक्रमों की प्रस्तुति एवं प.पू. गणाचार्य श्री का २०१० में उदयपुर के दीक्षित साधु-साध्वियों द्वारा पाद प्रक्षालन शास्त्र भेंट कर अपना १०वाँ दीक्षा दिवस मनाया गया। श्रद्धालुओं द्वारा पू. गणा. श्री को भक्ति पूर्वक अष्ट द्रव्य से पूजन की गई। सभी दीक्षित साधु साध्वियों की ओर से मुनिश्री विधेयसागर जी एवं आर्यिका विसंयोजनाश्री माता जी ने प.पू. गुरुदेव श्री विरागसागर जी महाराज के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की। प.पू. गणाचार्य श्री ने अपने मंगलमयी उदबोधन में सभी को धर्मोपदेश देते हुए दीक्षा दिवस पर उन सभी साधु साध्वियों को रत्नत्रय की वृद्धि का आशीष देते हुए सभी श्रद्धालुओं को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

श्रमण श्री विश्वनाथ सागर जी मुनिराज का समाधि मरण

समय का पता नहीं, कोई भरोसा नहीं- किस समय जीवन का अंत हो जाये वर्षा के पानी के बुलबुल के समान कब नष्ट हो जाय- कुछ नहीं मालूम पड़ता। यह क्षणभंगुर जीवन कब समाप्त हो जाय। मुनिजन सदैव सचेत रहते हैं वे मृत्यु से डरते नहीं उसे ललकारते हैं। हँसते-हँसते मृत्यु का वरण कर समाधि पूर्वक मरण के साथ अपनी इस मनुष्य पर्याय को सार्थक बना लेते हैं। दिनांक १३ जून २०१९ को सीकर (राज.) के पास दाता के निकट श्रमण मुनिश्री विश्वनाथ सागर जी का सड़क दुर्घटना में समाधि पूर्वक मरण हुआ। जिन्होंने प.पू. गुरुदेव गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज से पूर्व से ही सल्लेखना व्रत ले लिया था। उनका अन्तिम संस्कार दाता में महोत्सव पूर्वक किया गया।

समाधिस्थ मुनिश्री विश्वनाथ सागर जी का जीवन परिचय

पूर्व नाम	-	श्री विमल अजमेरा
ग्राम	-	हमीरपुर टोंक (राजस्थान) किशनगढ़ (राजस्थान)
पिता-माता	-	स्व. श्री राममल जी, स्व. श्रीमती पानाबाई जैन
जन्म/ शिक्षा	-	४.९.१९५० / कक्षा १० वीं
परिवार	-	धर्म पत्नी श्रीमती पवन देवी जैन (ब्रह्मचारिणी) बहिन-१, पुत्र-४।
वैराग्य	-	साधु संगति
ब्रह्मचर्य	-	२८.८.१८
क्षुल्लक दीक्षा	-	३.७.२०११ किशनगढ़
नाम	-	क्षुल्लक श्री विश्वनाथ सागर जी
मुनिदीक्षा	-	३.५.२०१२ जयुपर
नाम	-	मुनिश्री विश्वनाथ सागर जी
दीक्षा गुरु	-	प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज
समाधि	-	१३.६.२०१९ दाता जिला-सीकर (राजस्थान)

दिनांक १४.६.२०१९ को श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन मंदिर सभा भवन हावडा कलकत्ता में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ (४८ पिच्छी) के पावन सान्निध्य में विनयांजलि अर्पित कर कार्योत्सर्ग कर श्रद्धांञ्जलि अर्पित की गई।

विराग वर्ग पहेली 43

उदाहरण – र वि रा ग नहीं करना चाहिए। (प.पू. गणाचार्य गुरुवर का नाम) जैसे–विराग

दे	व	न	न्दि	त	दं	ष्प	पु
ऐ	र्ध	र	ग	सा	म्र	न	वि
र	मा	ब	र	सो	वि	फू	भ
ग	न	ज	रा	द्या	रा	र	व
सा	सा	लो	सा	डा	ग	ग	सा
धि	ग	ग	ली	यो	सा	सा	ग
वि	र	को	छो	ड़	ग	थु	र
सु	नी	ल	सा	ग	र	कुं	के

विराग वर्ग पहेली 42 के उत्तर

(1) भरत
(2) हैमवत
(3) रम्यकं
(4) ऐरावत
(5) शिखरीणी
(6) हरि
(7) विदेह
(8) महाहिमवन
(9) निषध
(10) नील

नोट– (1) इसमें आपको कोई १० त्यौहार के नाम दिये है। आपको खोजने हैं।
(2) जहाँ उत्तर मिले वहाँ ☐ डब्बा बनाये व क्रम से नाम लिखें।
(3) उदा.- इसमें नाम आड़े, तिरछे, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर भी हो सकता है।

उत्तर भेजनेवाले का नाम व पता (स्पष्ट तथा शुद्ध)

नाम .....मो. .....

पिता/पति का नाम .....

पता .....